CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2015 with Solution PDF-Set 2/3

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 100**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 4, 6, 7, 8, 9, 11 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

जब समाचार-पत्रों में सर्वसाधारण के लिए कोई सूचना प्रकाशित की जाती है तो उसको विज्ञापन कहते हैं । यह सूचना नौकरियों से सम्बन्धित हो सकती है, खाली मकान को किराये पर उठाने के सम्बन्ध में हो सकती है या किसी औषधि के प्रचार से सम्बन्धित हो सकती है । कुछ लोग विज्ञापन के आलोचक हैं । वे इसे निरर्थक मानते हैं । उनका मानना है कि यदि कोई वस्तु यथार्थ रूप में अच्छी है तो वह बिना किसी विज्ञापन के ही लोगों के बीच लोकप्रिय हो जाएगी जबकि ख़राब वस्तुएँ विज्ञापन की सहायता पाकर भी भंडाफोड़ होने पर बहुत दिनों तक टिक नहीं पाएँगीं । परन्तु लोगों की यह सोच ग़लत है ।

आज के युग में मानव का प्रचार-प्रसार का दायरा व्यापक हो चुका है । अतः विज्ञापनों का होना अनिवार्य हो जाता है । किसी अच्छी वस्तु की वास्तविकता से परिचय पाना आज के विशाल संसार में विज्ञापन के बिना नितान्त असंभव है । विज्ञापन ही वह शक्तिशाली माध्यम है जो हमारी ज़रूरत की वस्तुएँ प्रस्तुत करता है, उनकी माँग बढ़ाता है और अंततः हम उन्हें जुटाने चल पड़ते हैं । यदि कोई व्यक्ति या कम्पनी किसी वस्तु का निर्माण करती है, उसे उत्पादक कहा जाता है । उन वस्तुओं और सेवाओं को ख़रीदने वाला उपभोक्ता कहलाता है । इन दोनों को जोड़ने का कार्य विज्ञापन करता है । वह उत्पादक को उपभोक्ता के सम्पर्क में लाता है तथा माँग और पूर्ति में संतुलन स्थापित करने का प्रयत्न करता है ।

पुराने ज़माने में किसी वस्तु की अच्छाई का विज्ञापन मौखिक तरीक़े से होता था । काबुल का मेवा, कश्मीर की ज़री का काम, दक्षिण भारत के मसाले आदि वस्तुओं की प्रसिद्धि मौखिक रूप से होती थी । उस समय आवश्यकता भी कम होती थी तथा लोग किसी वस्तु के अभाव की तीव्रता का अनुभव नहीं करते थे । आज समय तेज़ी का है । संचार-क्रांति ने ज़िन्दगी को स्पीड दे दी है । मनुष्य की आवश्यकताएँ बढ़ती जा रही हैं । इसलिए विज्ञापन मानव-जीवन की अनिवार्यता बन गया है । [15 अंक]

1(क). गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समूचे गद्यांश का केंद्रीय विषय और उसका प्रतिपाद्य देखकर शीर्षक चुना जाता है।
- उत्तर का आधार प्रश्न के साथ दिया गया गद्यांश है; अनावश्यक बाहरी तथ्य नहीं जोड़ने चाहिए।

चरण 1: केंद्रीय विषय पहचानें गद्यांश में विज्ञापन की परिभाषा, उत्पादक और उपभोक्ता को जोड़ने का उसका कार्य तथा आधुनिक जीवन में उसकी आवश्यकता बताई गई है। आरंभ से अंत तक चर्चा विज्ञापन की भूमिका के इर्द-गिर्द रहती है।

चरण 2: शीर्षक का औचित्य देखें लेखक का मुख्य बल इस बात पर है कि बढ़ती आवश्यकताओं और व्यापक संसार में विज्ञापन अनिवार्य हो गया है। इसलिए शीर्षक में केवल विज्ञापन की परिभाषा के स्थान पर उसके महत्त्व का संकेत होना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक है : विज्ञापन का महत्त्व।

त्वरित सुझाव: शीर्षक में पूरे गद्यांश का केंद्रीय विचार आए; किसी एक उदाहरण को शीर्षक न बनाएँ।

1(ख). विज्ञापन किसे कहते हैं ? वह मानव जीवन का अनिवार्य अंग क्यों माना जाता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर में परिभाषा और अनिवार्यता के कारण, दोनों अलग-अलग स्पष्ट होने चाहिए।
- उत्तर का आधार प्रश्न के साथ दिया गया गद्यांश है; अनावश्यक बाहरी तथ्य नहीं जोड़ने चाहिए।

चरण 1: विज्ञापन का अर्थ समझें समाचार-पत्रों में सर्वसाधारण के लिए प्रकाशित सूचना को विज्ञापन कहते हैं। गद्यांश में नौकरी, किराये के मकान और औषधि के प्रचार से संबंधित सूचनाओं के उदाहरण दिए गए हैं। इस प्रकार विज्ञापन जनता को किसी अवसर, वस्तु या सेवा की जानकारी देता है।

चरण 2: अनिवार्यता के कारण बताएँ आज प्रचार-प्रसार का दायरा बहुत व्यापक हो गया है और मनुष्य की आवश्यकताएँ निरंतर बढ़ रही हैं। इतने विशाल संसार में अच्छी वस्तु की वास्तविकता से परिचय पाने के लिए विज्ञापन आवश्यक है। संचार-क्रांति ने जीवन की गति

बढ़ाई है; विज्ञापन आवश्यक वस्तुओं की सूचना देकर उन्हें जुटाने में सहायता करता है।

चरण 3: निष्कर्ष विज्ञापन सार्वजनिक रूप से प्रकाशित सूचना है। व्यापक संसार, बढ़ती आवश्यकताओं और वस्तुओं की जानकारी पाने की जरूरत के कारण वह मानव जीवन का अनिवार्य अंग माना जाता है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा के बाद व्यापक संसार और बढ़ती आवश्यकताओं को अनिवार्यता के दो कारणों के रूप में लिखें।

1(ग). उत्पादक किसे कहते हैं ? उत्पादक-उपभोक्ता सम्बन्धों को विज्ञापन कैसे प्रभावित करता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश के अनुसार निर्माता उत्पादक है और खरीदार उपभोक्ता; विज्ञापन दोनों के बीच संपर्क स्थापित करता है।
- उत्तर का आधार प्रश्न के साथ दिया गया गद्यांश है; अनावश्यक बाहरी तथ्य नहीं जोड़ने चाहिए।

चरण 1: उत्पादक की पहचान करें जो व्यक्ति या कंपनी किसी वस्तु का निर्माण करती है, उसे उत्पादक कहते हैं। उन वस्तुओं तथा सेवाओं को खरीदने वाला उपभोक्ता कहलाता है। निर्माता और खरीदार की ये अलग भूमिकाएँ समझने पर विज्ञापन का कार्य स्पष्ट हो जाता है।

चरण 2: विज्ञापन की भूमिका समझाएँ विज्ञापन उत्पादक की वस्तुओं और सेवाओं की जानकारी उपभोक्ताओं तक पहुँचाता है। वह उत्पादक को उपभोक्ता के संपर्क में लाता है, वस्तुओं के प्रति रुचि और माँग बढ़ाता है तथा खरीदने के लिए प्रेरित करता है। गद्यांश के अनुसार वह माँग और पूर्ति के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयत्न भी करता है।

चरण 3: निष्कर्ष वस्तु का निर्माता उत्पादक कहलाता है। विज्ञापन उत्पादक और उपभोक्ता को जोड़कर वस्तुओं की माँग बढ़ाता है तथा माँग और पूर्ति में संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल परिभाषा न दें; संपर्क स्थापित करना और माँग-पूर्ति का संतुलन भी अवश्य बताएँ।

1(घ). किसी विज्ञापन का उद्देश्य क्या होता है ? जीवन में इसकी उपयोगिता पर प्रकाश डालिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विज्ञापन का उद्देश्य वस्तु की जानकारी देना और माँग बढ़ाना है; उपयोगिता उसका जीवन में व्यावहारिक लाभ है।
- उत्तर का आधार प्रश्न के साथ दिया गया गद्यांश है; अनावश्यक बाहरी तथ्य नहीं जोड़ने चाहिए।

चरण 1: उद्देश्य स्पष्ट करें विज्ञापन का उद्देश्य हमारी जरूरत की वस्तुओं को हमारे सामने प्रस्तुत करना, उनकी विशेषताओं से परिचित कराना और उनकी माँग बढ़ाना है। गद्यांश में कहा गया है कि विज्ञापन के प्रभाव से हम उन वस्तुओं को जुटाने चल पड़ते हैं। इस तरह सूचना देना और खरीद के लिए प्रेरित करना उसके उद्देश्य हैं।

चरण 2: जीवन में उपयोगिता बताएँ विज्ञापन नौकरी, खाली मकान और औषधि जैसी आवश्यक सूचनाएँ उपलब्ध कराता है। वह विशाल संसार में अच्छी वस्तुओं की जानकारी लोगों तक पहुँचाता है और उत्पादक को उपभोक्ता से जोड़ता है। बढ़ती जरूरतों तथा तेज जीवन-गति के बीच आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं से परिचय कराने के कारण वह उपयोगी है।

चरण 3: निष्कर्ष विज्ञापन वस्तुओं की जानकारी देकर उनकी माँग बढ़ाता है। जरूरी सूचनाएँ उपलब्ध कराने और उत्पादक-उपभोक्ता को जोड़ने के कारण जीवन में उसकी विशेष उपयोगिता है।

त्वरित सुझाव: उद्देश्य में विज्ञापन क्या करता है और उपयोगिता में उससे लोगों को क्या लाभ होता है, यह लिखें।

1(ङ). पुराने समय में विज्ञापन का तरीक़ा क्या था ? वर्तमान तकनीकी युग ने इसे किस प्रकार प्रभावित किया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर में पुराने मौखिक प्रचार और वर्तमान व्यापक संचार की तुलना गद्यांश के आधार पर की जाती है।
- उत्तर का आधार प्रश्न के साथ दिया गया गद्यांश है; अनावश्यक बाहरी तथ्य नहीं जोड़ने चाहिए।

चरण 1: पुरानी पद्धति बताएँ पुराने समय में वस्तुओं की अच्छाई का विज्ञापन मौखिक रूप से होता था। लोग एक-दूसरे को वस्तुओं के गुण बताते थे और उनकी प्रसिद्धि फैलती थी। गद्यांश में काबुल के मेवे, कश्मीर की जरी के काम और दक्षिण भारत के मसालों की प्रसिद्धि इसी मौखिक पद्धति से होने का उल्लेख है।

चरण 2: तकनीकी युग का प्रभाव समझाएँ वर्तमान युग में संचार-क्रांति ने जीवन को गति दी है और प्रचार-प्रसार का दायरा व्यापक कर दिया है। पहले जरूरतें कम थीं, जबकि अब मनुष्य की आवश्यकताएँ लगातार बढ़ रही हैं। इसीलिए केवल सीमित मौखिक जानकारी पर्याप्त नहीं रह गई; व्यापक स्तर पर वस्तुओं का परिचय कराने वाला विज्ञापन जीवन की अनिवार्यता बन गया है।

चरण 3: निष्कर्ष पहले विज्ञापन मौखिक होता था। वर्तमान संचार-क्रांति, बढ़ती जीवन-गति और विस्तृत आवश्यकताओं ने उसके प्रचार का दायरा बढ़ाकर उसे अनिवार्य बना दिया है।

त्वरित सुझाव: पुरानी पद्धति के लिए मौखिक शब्द तथा वर्तमान बदलाव के लिए संचार-क्रांति का उल्लेख करें।

1(च). विज्ञापन के आलोचकों के विज्ञापन के सन्दर्भ में क्या विचार हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न आलोचकों की धारणा पूछता है; उसे लेखक के अंतिम मत से अलग रखकर बताना चाहिए।
- उत्तर का आधार प्रश्न के साथ दिया गया गद्यांश है; अनावश्यक बाहरी तथ्य नहीं जोड़ने चाहिए।

चरण 1: अच्छी वस्तुओं संबंधी विचार लिखें विज्ञापन के आलोचक उसे निरर्थक मानते हैं। उनका विचार है कि यदि कोई वस्तु वास्तव में अच्छी है तो वह अपने गुणों के कारण बिना विज्ञापन के ही लोगों में लोकप्रिय हो जाएगी। उनके अनुसार अच्छी वस्तु की पहचान और स्वीकृति के लिए विज्ञापन अनिवार्य नहीं है।

चरण 2: खराब वस्तुओं संबंधी विचार लिखें आलोचकों का दूसरा तर्क है कि खराब वस्तुएँ विज्ञापन का सहारा लेकर कुछ समय के लिए प्रचार पा सकती हैं, परंतु उनका भंडाफोड़ होने पर वे बहुत दिनों तक नहीं टिक पाएँगी। इस प्रकार वे वस्तु की वास्तविक गुणवत्ता को निर्णायक और विज्ञापन को अनावश्यक मानते हैं। गद्यांश का लेखक आगे इस धारणा को गलत कहता है।

चरण 3: निष्कर्ष आलोचक विज्ञापन को निरर्थक मानते हैं : अच्छी वस्तु अपने गुणों से लोकप्रिय हो जाएगी और खराब वस्तु सच्चाई खुलने के बाद विज्ञापन के बल पर भी अधिक समय तक नहीं टिक सकेगी।

त्वरित सुझाव: आलोचकों के दोनों तर्क लिखें : अच्छी वस्तु की स्वतः प्रसिद्धि और खराब वस्तु का भंडाफोड़।

1(छ). आज की भाग-दौड़ की ज़िन्दगी में विज्ञापन का महत्त्व उदाहरण देकर समझाइए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में दिए उदाहरणों से विज्ञापन की सूचना देने और आवश्यकताओं से जोड़ने की भूमिका समझाई जाती है।
- उत्तर का आधार प्रश्न के साथ दिया गया गद्यांश है; अनावश्यक बाहरी तथ्य नहीं जोड़ने चाहिए।

चरण 1: महत्त्व स्पष्ट करें आज की भाग-दौड़ की जिंदगी में मनुष्य की आवश्यकताएँ बढ़ती जा रही हैं और संसार का दायरा बहुत व्यापक हो गया है। प्रत्येक व्यक्ति स्वयं हर अच्छी वस्तु या उपयोगी अवसर की जानकारी नहीं जुटा सकता। विज्ञापन जरूरत की वस्तुओं और सेवाओं को सामने लाता है तथा उत्पादक और उपभोक्ता के बीच संपर्क बनाता है।

चरण 2: गद्यांश से उदाहरण दें उदाहरण के लिए, नौकरी का विज्ञापन काम की तलाश कर रहे व्यक्ति को अवसर की सूचना देता है। इसी तरह किराये पर उपलब्ध खाली मकान की सूचना मकान ढूँढ़ने वाले तक पहुँचती है। औषधि का विज्ञापन भी उससे संबंधित जानकारी देता है। ये उदाहरण बताते हैं कि विज्ञापन आवश्यक सूचना को संबंधित लोगों तक पहुँचाने का शक्तिशाली माध्यम है।

चरण 3: निष्कर्ष तेज जीवन-गति में विज्ञापन उपयोगी सूचनाएँ लोगों तक पहुँचाता है। नौकरी और किराये के मकान के विज्ञापन इसके उदाहरण हैं; वे आवश्यकता वाले व्यक्ति को उपलब्ध अवसर से जोड़ते हैं।

त्वरित सुझाव: उदाहरण गद्यांश में दिए गए नौकरी, मकान या औषधि में से चुनें और उनका लाभ भी स्पष्ट करें।

1(ज). उपसर्ग-प्रत्यय पृथक् कीजिए :

अनिवार्य, वास्तविकता । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शब्द के पहले जुड़ने वाला अंश उपसर्ग और अंत में जुड़ने वाला अंश प्रत्यय कहलाता है।
- शब्द-रचना में आधार शब्द और जुड़े अंश के अर्थ को देखकर विभाजन की पुष्टि करनी चाहिए।

चरण 1: अनिवार्य का उपसर्ग अलग करें अनिवार्य में अ उपसर्ग है और आधार शब्द निवार्य है। निवार्य का अर्थ है जिसे टाला जा सके; अ जुड़ने पर अर्थ होता है जिसे टाला न जा सके। अतः शब्द-विभाजन है : अ + निवार्य। यहाँ निषेध का भाव उपसर्ग से प्राप्त होता है।

चरण 2: वास्तविकता का प्रत्यय अलग करें वास्तविकता में वास्तविक आधार शब्द है और ता प्रत्यय है। ता जुड़ने पर वास्तविक होने के भाव या अवस्था का बोध होता है। इसलिए शब्द-विभाजन है : वास्तविक + ता। प्रत्यय को शब्द के अंत से अलग करना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष अनिवार्य : अ उपसर्ग + निवार्य। वास्तविकता : वास्तविक + ता प्रत्यय।

त्वरित सुझाव: उपसर्ग निकालते समय बचा हुआ आधार शब्द सार्थक हो; प्रत्यय शब्द के अंतिम अंश से पहचानें।

1(झ). मिश्र वाक्य में बदलिए :

'वस्तुओं और सेवाओं को ख़रीदने वाला उपभोक्ता कहलाता है ।' [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मिश्र वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य और एक आश्रित उपवाक्य होता है।
- विशेषण पदबंध को संबंधवाचक उपवाक्य में बदलते समय मूल अर्थ सुरक्षित रखा जाता है।

चरण 1: मूल पदबंध पहचानिए वाक्य में 'वस्तुओं और सेवाओं को ख़रीदने वाला' पदबंध उपभोक्ता की पहचान बताता है। इसे 'जो वस्तुओं और सेवाओं को ख़रीदता है' आश्रित उपवाक्य में बदला जा सकता है।

चरण 2: प्रधान और आश्रित उपवाक्य जोड़िए 'जो' से आरंभ हुआ अंश आश्रित उपवाक्य है। उसके साथ 'वह उपभोक्ता कहलाता है' प्रधान उपवाक्य जोड़ने पर वाक्य मिश्र बन जाता है। क्रिया का सामान्य वर्तमान काल तथा ख़रीदने वाले व्यक्ति का अर्थ यथावत रहता है।

चरण 3: निष्कर्ष जो वस्तुओं और सेवाओं को ख़रीदता है, वह उपभोक्ता कहलाता है।

त्वरित सुझाव: 'करने वाला' जैसे विशेषण पदबंध को 'जो ... करता है, वह ...' में बदलकर मिश्र वाक्य बनाइए।

2. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

नीड़ का निर्माण फिर-फिर
नेह का आह्वान फिर-फिर
वह उठी आँधी कि नभ में
छा गया सहसा अँधेरा
धूलि-धूसर बादलों ने
भूमि को इस भाँति घेरा,
रात-सा दिन हो गया फिर
रात आई और काली,
लग रहा था अब न होगा,
इस निशा का फिर सवेरा,
रात के उत्पात-भय से
भीत जन-जन, भीत कण-कण
किंतु प्राची से उषा की
मोहिनी मुस्कान फिर-फिर ।
नीड़ का निर्माण फिर-फिर
नेह का आह्वान फिर-फिर [5 अंक]

2(क). आँधी तथा बादल किसके प्रतीक हैं ? इनके क्या परिणाम होते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में प्राकृतिक दृश्य जीवन की स्थितियों के प्रतीक बनते हैं।
- प्रतीक का अर्थ उसके साथ चित्रित परिणामों से पहचाना जाता है।

चरण 1: आँधी और बादलों का अर्थ समझिए आँधी तथा धूलि-धूसर बादल जीवन में आने वाली विपत्तियों, बाधाओं और विनाशकारी परिस्थितियों के प्रतीक हैं। इनके कारण प्रकाश छिप जाता है और चारों ओर अँधेरा फैलता है।

चरण 2: परिणाम को पंक्तियों से जोड़िए 'रात-सा दिन हो गया' और 'भीत जन-जन, भीत कण-कण' बताते हैं कि इन संकटों से आशा क्षीण पड़ती है तथा भय और निराशा फैलते हैं। निर्माण के उजड़ने और जीवन के असुरक्षित होने का भाव भी इसी अंधकारमय दृश्य में निहित है।

चरण 3: निष्कर्ष आँधी और बादल जीवन की विपत्तियों तथा विनाशकारी बाधाओं के प्रतीक हैं। इनके परिणामस्वरूप भय, निराशा और अंधकार छा जाते हैं तथा जीवन का निर्माण बाधित होता है।

त्वरित सुझाव: प्रतीक का उत्तर देते समय उसके साथ कविता में आए प्रभाव का भी उल्लेख कीजिए।

2(ख). कवि निर्माण का आह्वान क्यों करता है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश का केंद्रीय भाव संकट के बाद भी आशा और सृजन बनाए रखना है।
- बार-बार दोहराया गया आह्वान कवि के जीवन-संदेश को स्पष्ट करता है।

चरण 1: विनाश के बाद की आवश्यकता पहचानिए आँधी और अंधकार जीवन में विनाश, भय और निराशा लाते हैं। ऐसे समय में टूटे

हुए जीवन को फिर सँवारने के लिए निर्माण की आवश्यकता होती है। इसलिए कवि संकट से हार मानने के स्थान पर नया प्रयास चाहता है।

चरण 2: उषा के संकेत से कारण स्पष्ट कीजिए प्राची से उषा की मुस्कान लौटना बताता है कि अंधकार स्थायी नहीं है। जैसे सवेरा फिर आता है, वैसे ही मनुष्य प्रेम और आशा के साथ नया नीड़ बना सकता है। 'नीड़ का निर्माण फिर-फिर' इसी निरंतर सृजन की प्रेरणा देता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि निर्माण का आह्वान इसलिए करता है कि मनुष्य विपत्तियों से निराश होकर हार न माने, बल्कि आशा और प्रेम के साथ उजड़े जीवन को बार-बार सँवारे।

त्वरित सुझाव: निर्माण के आह्वान को केवल घर बनाने तक सीमित न रखें; उसे नए जीवन और आशा से जोड़िए।

2(ग). कवि किस बात से भयभीत है और क्यों ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में कवि की आशंका को उसकी अपनी पंक्तियों से स्पष्ट करना चाहिए।
- बाहरी अंधकार मन में उत्पन्न भय और निराशा को भी व्यक्त करता है।

चरण 1: भय की पहचान कीजिए कवि को भय है कि अत्यंत अँधेरी और उत्पातपूर्ण रात का अंत नहीं होगा तथा फिर सवेरा नहीं आएगा। 'लग रहा था अब न होगा, इस निशा का फिर सवेरा' इसी आशंका को प्रत्यक्ष व्यक्त करता है।

चरण 2: इस आशंका का कारण बताइए तेज़ आँधी और धूल से भरे बादलों ने आकाश तथा धरती को ढक लिया है। दिन भी रात जैसा हो गया और उसके बाद रात अधिक काली हो गई। इस घने अंधकार और चारों ओर फैले भय ने कवि को प्रकाश के लौटने के प्रति सशंकित किया है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि इस बात से भयभीत है कि अँधेरी रात का अंत और फिर सवेरा शायद न हो, क्योंकि आँधी और बादलों के कारण गहरा अंधकार तथा उत्पात छा गया है।

त्वरित सुझाव: भय के प्रश्न में 'किस बात से' और 'क्यों' दोनों का उत्तर अलग-अलग पहचानकर लिखिए।

2(घ). उषा की मुस्कान मानव-मन को क्या प्रेरणा देती है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उषा नए प्रकाश, आशा और जीवन के पुनः आरंभ का संकेत है।
- प्राकृतिक दृश्य से मिलने वाली मानवीय प्रेरणा कविता के केंद्रीय भाव से जुड़ी होती है।

चरण 1: उषा के आगमन का अर्थ बताइए भीषण रात के बाद पूर्व दिशा से उषा की मोहिनी मुस्कान दिखाई देती है। यह संकेत देती है कि संकट कितना भी गहरा हो, वह सदा नहीं रहता; उसके बाद प्रकाश और आशा लौट सकते हैं।

चरण 2: मानव-मन के लिए संदेश निकालिए उषा मनुष्य को विपत्तियों से डरकर निष्क्रिय न होने, साहस बनाए रखने और फिर से निर्माण करने की प्रेरणा देती है। नीड़ तथा नेह का बार-बार आह्वान जीवन को प्रेम के साथ सँवारने और प्रयास जारी रखने का संदेश पुष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष उषा की मुस्कान मनुष्य को निराशा त्यागकर आशावान रहने, कठिनाइयों का साहस से सामना करने और नए उत्साह से जीवन का पुनर्निर्माण करने की प्रेरणा देती है।

त्वरित सुझाव: उषा को आशा से जोड़ते हुए उत्तर में मनुष्य के लिए अपेक्षित कर्म भी अवश्य बताइए।

2(ङ). 'रात आई और काली' का आशय स्पष्ट कीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पंक्ति का आशय उसके पहले और बाद के दृश्य को ध्यान में रखकर खोला जाता है।
- अंधकार की तीव्रता यहाँ संकट तथा निराशा की गहराई भी व्यक्त करती है।

चरण 1: दृश्य का क्रम समझिए आँधी और धूलि-धूसर बादलों के कारण दिन पहले ही रात के समान अँधेरा हो चुका था। जब वास्तविक रात आई, तो वह उस अँधेरे दिन से भी अधिक काली और भयावह प्रतीत हुई।

चरण 2: अंतर्निहित भाव स्पष्ट कीजिए पंक्ति संकटों के लगातार बढ़ने और आशा का प्रकाश दब जाने की स्थिति व्यक्त करती है। अंधकार इतना घना है कि सवेरे के लौटने पर भी संदेह होने लगता है। इसलिए 'और काली' केवल रंग नहीं, भय तथा निराशा की बढ़ती तीव्रता का संकेत भी है।

चरण 3: निष्कर्ष 'रात आई और काली' का आशय है कि आँधी से अँधेरे हुए दिन के बाद आई रात और भी घनी तथा भयावह थी; अर्थात संकट और निराशा की स्थिति अधिक गहरी हो गई थी।

त्वरित सुझाव: आशय लिखते समय पहले दृश्य का सीधा अर्थ और फिर उसका भावात्मक संकेत स्पष्ट कीजिए।

3(क). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए : विद्यार्थी और राजनीति [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में भूमिका, विषय का संतुलित विवेचन और सार्थक उपसंहार होना चाहिए।
- विद्यार्थी की राजनीतिक जागरूकता का मूल्यांकन शिक्षा, लोकतांत्रिक कर्तव्य तथा अनुशासन के संदर्भ में किया जाता है।

चरण 1: विषय की रूपरेखा बनाइए आरंभ में विद्यार्थी जीवन और राजनीति का संबंध स्पष्ट कीजिए। फिर राजनीतिक जागरूकता के लाभ, दलगत हस्तक्षेप के दुष्परिणाम और भागीदारी की उचित सीमा पर विचार रखिए। अंत में अध्ययन तथा उत्तरदायी नागरिकता के संतुलन का संदेश दीजिए।

चरण 2: पूरा आदर्श निबंध विद्यार्थी और राजनीति

विद्यार्थी देश का भविष्य हैं। आज वे जो सीखते और सोचते हैं, कल वही समाज और राष्ट्र की दिशा निर्धारित करता है। राजनीति भी सार्वजनिक जीवन की समस्याओं और उनके समाधान से जुड़ी है। इसलिए विद्यार्थियों का उससे पूर्णतः अनजान रहना उचित नहीं है। प्रश्न यह है कि राजनीति से उनका संबंध किस रूप में हो।

लोकतंत्र में हर नागरिक को अपने अधिकारों और कर्तव्यों की जानकारी होनी चाहिए। विद्यार्थी संविधान, चुनाव, शासन और सामाजिक न्याय का अध्ययन करके जागरूक नागरिक बन सकते हैं। समाचारों को विवेकपूर्वक पढ़ना, सार्वजनिक प्रश्नों पर चर्चा करना तथा अलग विचार रखने वालों की बात सुनना उनकी समझ बढ़ाता है। महाविद्यालयों के छात्र-संगठन भी संवाद और उत्तरदायित्व का अभ्यास करा सकते हैं। इससे नेतृत्व, सहयोग और समस्याओं के शांतिपूर्ण समाधान की क्षमता विकसित होती है।

लेकिन राजनीतिक जागरूकता और दलगत संघर्ष में अंतर है। जब राजनीतिक दल अपने स्वार्थ के लिए विद्यार्थियों का उपयोग करते हैं, तब शिक्षा प्रभावित होती है। कक्षाओं का बाधित होना, हिंसा, धमकी और वैमनस्य विद्यार्थी जीवन को नुकसान पहुँचाते हैं। किसी नेता का अंधसमर्थन करने के बजाय उसके विचारों तथा कार्यों को तर्क और तथ्यों की कसौटी पर परखना आवश्यक है। जाति, धर्म या निजी लाभ के आधार पर दूसरों से शत्रुता करना लोकतांत्रिक आचरण नहीं है।

विद्यार्थियों का प्रथम कर्तव्य अध्ययन और अपने व्यक्तित्व का विकास है। इसके साथ वे स्वच्छता, साक्षरता, पर्यावरण संरक्षण और जन-जागरूकता जैसे रचनात्मक कार्य कर सकते हैं। पात्र होने पर सोच-समझकर मतदान करना और शांतिपूर्ण ढंग से अपनी बात रखना भी जिम्मेदार भागीदारी है। शिक्षकों तथा अभिभावकों को उन्हें स्वतंत्र चिंतन, संवैधानिक मूल्यों और अनुशासन की शिक्षा देनी चाहिए।

अतः विद्यार्थियों को राजनीति के प्रति सजग रहना चाहिए, पर अपनी शिक्षा और विवेक की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। ज्ञान, सहिष्णुता

और सेवा की भावना से संपन्न विद्यार्थी ही आगे चलकर देश को स्वस्थ नेतृत्व दे सकते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष विद्यार्थियों के लिए राजनीतिक जागरूकता उपयोगी है। अध्ययन को प्राथमिकता देते हुए विवेकपूर्ण, शांतिपूर्ण और रचनात्मक सहभागिता ही उनके तथा राष्ट्र के हित में है।

त्वरित सुझाव: निबंध में केवल पक्ष या विपक्ष न गिनाएँ; जागरूकता और दलगत दुरुपयोग का अंतर उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिए।

3(ख). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए : मेरा प्रिय खेल – कबड्डी [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यक्तिपरक निबंध में खेल के परिचय के साथ उसे प्रिय मानने के कारण तथा अपने अनुभव स्पष्ट किए जाते हैं।
- विषयवस्तु को भूमिका, खेल की विधि, लाभ, व्यक्तिगत अनुभव और उपसंहार के क्रम में व्यवस्थित करना चाहिए।

चरण 1: रूपरेखा और विषयवस्तु पहले कबड्डी का संक्षिप्त परिचय दीजिए। फिर इसके सामान्य नियम, शारीरिक और मानसिक लाभ तथा दल-भावना का महत्त्व समझाइए। निजी अनुभव जोड़ने से निबंध आत्मीय बनेगा। अंत में खेलों को जीवन में स्थान देने का संदेश दीजिए। अनावश्यक इतिहास और अप्रमाणित आँकड़ों से बचिए।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध मेरा प्रिय खेल – कबड्डी

खेल जीवन में स्वास्थ्य, उत्साह और अनुशासन का संचार करते हैं। मुझे अनेक खेल अच्छे लगते हैं, किंतु मेरा प्रिय खेल कबड्डी है। भारतीय जनजीवन से जुड़ा यह खेल कम साधनों में खेला जा सकता है। इसकी सादगी और रोमांच मुझे विशेष रूप से आकर्षित करते हैं।

कबड्डी दो दलों के बीच खेली जाती है। प्रत्येक दल के सात खिलाड़ी मैदान में उतरते हैं। एक दल का आक्रमणकारी विपक्षी क्षेत्र में जाता है और खिलाड़ियों को छूकर अपने क्षेत्र में लौटने का प्रयत्न करता है। विरोधी दल उसे रोकने का प्रयास करता है। इस खेल में आक्रमण और बचाव दोनों का महत्त्व है। सफलता केवल शारीरिक शक्ति से नहीं, बल्कि चपलता, संतुलन और सही समय पर निर्णय लेने से मिलती है।

मैं अपने मित्रों के साथ विद्यालय के मैदान में कबड्डी खेलता हूँ। खेलते समय हम पहले दल बनाते हैं और नियमों पर सहमति कर लेते हैं। किसी साथी से भूल होने पर उसका उपहास करने के स्थान पर उसे प्रोत्साहित करते हैं। कभी हमारा दल जीतता है और कभी हारता है, पर हर बार कुछ नया सीखने को मिलता है। खेल समाप्त होने पर प्रतिद्वंद्वी भी फिर मित्र बन जाते हैं।

कबड्डी पूरे शरीर का व्यायाम कराती है। इससे फुर्ती, सहनशक्ति और सजगता बढ़ती है। साथ ही यह सहयोग और आत्मसंयम सिखाती है। खिलाड़ी को अपने साथियों की स्थिति देखकर योजना बनानी पड़ती है। अकेले प्रदर्शन करने की इच्छा दल की सफलता में बाधा बन सकती है। इस प्रकार कबड्डी हमें सामूहिक हित को प्राथमिकता देना सिखाती है।

आज पढ़ाई और मोबाइल के बीच बच्चों की शारीरिक गतिविधियाँ घटती जा रही हैं। ऐसे समय में कबड्डी जैसे सुलभ खेलों को बढ़ावा देना आवश्यक है। विद्यालयों में सुरक्षित मैदान और नियमित अभ्यास की व्यवस्था होनी चाहिए। मेरे लिए कबड्डी मनोरंजन के साथ स्वस्थ जीवन और मिलजुलकर आगे बढ़ने की प्रेरणा भी है।

चरण 3: निष्कर्ष कबड्डी अपनी सादगी, रोमांच और सहयोग की शिक्षा के कारण मेरा प्रिय खेल है। यह शरीर को स्वस्थ और व्यक्तित्व को अनुशासित बनाती है।

त्वरित सुझाव: निबंध में खेल के नियमों की लंबी सूची देने के बजाय अपने अनुभव और कबड्डी से मिली सहयोग की सीख का एक स्पष्ट उदाहरण जोड़िए।

3(ग). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए : अनेकता में एकता – हिन्द की विशेषता [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विचारप्रधान निबंध में विषय की व्याख्या, उपयुक्त उदाहरण और उनसे निकला संदेश तार्किक क्रम में प्रस्तुत किया जाता है।
- अनेकता में एकता का अर्थ भिन्न पहचानों को मिटाना नहीं, बल्कि परस्पर सम्मान और समान नागरिकता के आधार पर साथ रहना है।

चरण 1: रूपरेखा और विषयवस्तु भूमिका में भारत की विविधता का परिचय दीजिए। मुख्य भाग में भाषाओं, धर्मों, वेशभूषा और परंपराओं के उदाहरण देकर साझा राष्ट्रीय जीवन समझाइए। फिर एकता के सामने उपस्थित चुनौतियाँ और नागरिकों के दायित्व बताइए। उपसंहार में विविधता के सम्मान तथा सहयोग का संकल्प व्यक्त कीजिए।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध अनेकता में एकता – हिन्द की विशेषता

भारत विविधताओं से भरा देश है। यहाँ भौगोलिक परिस्थितियों से लेकर भाषाओं, वेशभूषा, भोजन और त्योहारों तक अनेक रूप दिखाई देते हैं। फिर भी इन भिन्नताओं के बीच एक साझा भारतीय पहचान विद्यमान है। यही अनेकता में एकता हमारे देश की विशिष्ट पहचान है।

उत्तर के हिमालय, पश्चिम के मरुस्थल, पूर्व के हरित प्रदेश और दक्षिण के समुद्री तट भारत की प्राकृतिक विविधता दर्शाते हैं। अलग-अलग क्षेत्रों में जीवन-शैली भी अलग है। कहीं चावल प्रमुख भोजन है तो कहीं गेहूँ। अनेक भाषाएँ और बोलियाँ हमारी भावनाओं को अभिव्यक्ति देती हैं। यह विविधता हमारी संस्कृति को समृद्ध बनाती है। किसी क्षेत्र की भाषा या परंपरा को छोटा समझना अपनी ही विरासत का अपमान है।

भारत में विभिन्न धर्मों के अनुयायी रहते हैं। उनके उपासना के तरीके भिन्न हो सकते हैं, किंतु मानवीय करुणा, सेवा और सद्भाव सबको जोड़ सकते हैं। एक-दूसरे के त्योहारों में भाग लेना और पड़ोसी के सुख-दुख में साथ खड़ा होना सामाजिक एकता को मजबूत करता है। संगीत, साहित्य, खेल और साझा कार्यस्थल भी लोगों को निकट लाते हैं।

हमारा संविधान सभी नागरिकों को समानता और धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार देता है। राष्ट्रीय ध्वज, लोकतांत्रिक संस्थाएँ और देश के प्रति दायित्व हमारे सार्वजनिक जीवन को जोड़ते हैं। स्वतंत्रता आंदोलन में विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों के लोगों ने साथ संघर्ष किया था। आज भी प्राकृतिक आपदा के समय देश के अलग-अलग हिस्सों से सहायता पहुँचती है। ऐसे अवसर बताते हैं कि हमारी एकता केवल नारा नहीं, व्यवहार में प्रकट होने वाली भावना है।

फिर भी सांप्रदायिकता, जातिगत भेदभाव, भाषाई अहंकार और क्षेत्रीय संकीर्णता एकता को चोट पहुँचाते हैं। अफवाहों और घृणा का विरोध करना हर नागरिक का दायित्व है। विद्यालयों में अन्य प्रदेशों की संस्कृति का परिचय तथा घरों में सहिष्णुता का संस्कार इस दिशा में सहायक हैं।

एकता का अर्थ सबको एक जैसा बना देना नहीं है। सच्ची एकता भिन्नताओं के सम्मान और समान अवसरों से विकसित होती है। यदि हम संवाद, सहयोग और न्याय को अपनाएँ, तो भारत की विविधता उसकी शक्ति बनी रहेगी। यही भावना हिन्द की विशेषता को सुरक्षित रख सकती है।

चरण 3: निष्कर्ष भारत की एकता विविध भाषाओं, धर्मों और संस्कृतियों के परस्पर सम्मान से सुदृढ़ होती है। समानता और सहयोग इस राष्ट्रीय विशेषता की रक्षा करते हैं।

त्वरित सुझाव: हर विविधता के उदाहरण के बाद यह भी बताइए कि साझा नागरिकता या सहयोग उसे राष्ट्रीय एकता से कैसे जोड़ता है।

3(घ). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए : भारतीय वैज्ञानिकों की उपलब्धियाँ [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में भूमिका, विषय का क्रमबद्ध विस्तार और उपसंहार होता है। भारतीय वैज्ञानिकों की उपलब्धियों को ठोस उदाहरणों तथा जनजीवन पर उनके प्रभाव से स्पष्ट करना चाहिए।
- वैज्ञानिक उपलब्धि केवल सम्मान प्राप्त करना नहीं है; ज्ञान की वृद्धि, स्वदेशी तकनीक और समाज की समस्याओं का समाधान भी उसकी कसौटियाँ हैं।

चरण 1: विषय की रूपरेखा पहले भारत की वैज्ञानिक परंपरा का परिचय दें। फिर भौतिकी, चिकित्सा, अंतरिक्ष, परमाणु ऊर्जा और कृषि में योगदान के उदाहरण रखें। अंत में वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा अनुसंधान को प्रोत्साहन देने की आवश्यकता बताएँ। व्यक्तियों और उपलब्धियों का सही संबंध रखें तथा अतिरंजित दावों से बचें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध भारतीय वैज्ञानिकों की उपलब्धियाँ

भारत की प्रगति में वैज्ञानिकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जिज्ञासा, प्रयोग और निरंतर परिश्रम के बल पर उन्होंने देश को नई पहचान दी है। उनकी उपलब्धियाँ प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं रहीं; उन्होंने स्वास्थ्य, कृषि, संचार और उद्योग को भी नई दिशा दी है।

प्राचीन भारत में आर्यभट ने गणित और खगोलविज्ञान को समृद्ध किया। आधुनिक काल में जगदीशचंद्र बसु ने पौधों की प्रतिक्रियाओं के अध्ययन तथा विद्युतचुंबकीय तरंगों पर अपने प्रयोगों से विज्ञान को आगे बढ़ाया। सी. वी. रमन ने प्रकाश के प्रकीर्णन पर महत्वपूर्ण खोज की, जिसे रमन प्रभाव कहते हैं। इस उपलब्धि के लिए उन्हें भौतिकी का नोबेल पुरस्कार मिला। श्रीनिवास रामानुजन ने गणित में असाधारण योगदान दिया।

होमी जहाँगीर भाभा ने भारत के परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम की नींव रखी। विक्रम साराभाई ने अंतरिक्ष अनुसंधान को राष्ट्रीय विकास से जोड़ा। भारतीय वैज्ञानिकों और अभियंताओं के सामूहिक प्रयास से उपग्रह प्रक्षेपण, दूरसंचार तथा मौसम संबंधी जानकारी के क्षेत्र में बड़ी प्रगति हुई। मंगलयान ने भारत की वैज्ञानिक क्षमता और कुशल योजना का परिचय दिया। ए. पी. जे. अब्दुल कलाम ने प्रक्षेपण यान और रक्षा प्रौद्योगिकी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कृषि के क्षेत्र में एम. एस. स्वामीनाथन के प्रयासों ने हरित क्रांति को बल दिया और खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाने में सहायता की। चिकित्सा तथा औषधि अनुसंधान ने रोगों की रोकथाम और उपचार की सुविधाएँ बढ़ाईं। इन उपलब्धियों का वास्तविक महत्व सामान्य नागरिक के जीवन में आने वाला सुधार है।

आज आवश्यकता है कि विद्यार्थियों में प्रश्न पूछने, प्रमाण खोजने और प्रयोग करने की प्रवृत्ति विकसित हो। अनुसंधान संस्थानों को संसाधन तथा युवा प्रतिभाओं को अवसर मिलने चाहिए। भारतीय वैज्ञानिकों की उपलब्धियाँ हमें गर्व के साथ यह दायित्व भी देती हैं कि विज्ञान का उपयोग मानवकल्याण और पर्यावरण की रक्षा के लिए करें।

चरण 3: निष्कर्ष भारतीय वैज्ञानिकों ने ज्ञान, स्वावलंबन और जनकल्याण में उल्लेखनीय योगदान दिया है। इन उपलब्धियों से प्रेरणा लेकर वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना हमारा दायित्व है।

त्वरित सुझाव: वैज्ञानिक का नाम लिखते समय उसकी सही उपलब्धि भी जोड़ें; केवल नामों की सूची बनाने के बजाय समाज पर उसका प्रभाव बताएँ।

4. किसी भी दुर्घटना के दर्शक/साक्षी उस हादसे के प्रति प्रायः उदासीन रहते हैं । उनकी हृदयहीनता की चर्चा करते हुए किसी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक को पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता, विषय, संबोधन, समस्या का विवेचन, सुझाव और औपचारिक समापन आवश्यक हैं।

- दुर्घटना के साक्षियों की उदासीनता पर चर्चा करते समय पीड़ित की सहायता, मानवीय संवेदना और नागरिक उत्तरदायित्व को केंद्र में रखना चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना पत्र में पहले दुर्घटना के समय दर्शकों की संवेदनहीनता का उल्लेख करें। फिर सहायता में देरी का दुष्परिणाम तथा उदासीनता के कारण बताएँ। अंत में सुरक्षित ढंग से सहायता करने, आपात सेवाओं को सूचना देने और जनजागरण के सुझाव रखें। किसी अप्रमाणित घटना या व्यक्ति पर आरोप लगाने के बजाय व्यापक सामाजिक समस्या पर संयत भाषा में लिखें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श पत्र 24, शांति विहार
नई दिल्ली

20 मार्च, 2015

संपादक महोदय
दैनिक जनवाणी
नई दिल्ली

विषय: दुर्घटना के साक्षियों की उदासीनता के संबंध में

महोदय,

आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से मैं दुर्घटनाओं के समय दर्शकों की बढ़ती उदासीनता की ओर समाज का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। सड़क पर घायल व्यक्ति सहायता की प्रतीक्षा करता रहता है, जबकि आसपास भीड़ जमा हो जाती है। कुछ लोग केवल देखते हैं और कुछ तस्वीरें लेने में व्यस्त रहते हैं। ऐसी हृदयहीनता हमारी मानवीय संवेदना पर प्रश्नचिह्न लगाती है।

कई लोग समय की कमी या पुलिस संबंधी झंझट की आशंका से पीछे हटते हैं। किंतु सहायता में थोड़ी देर भी घायल के लिए घातक हो सकती है। संकट में पड़े व्यक्ति को तमाशे की वस्तु समझना अत्यंत दुखद है। हमें याद रखना चाहिए कि कभी हमारे अपने परिजन भी ऐसी परिस्थिति में पड़ सकते हैं।

नागरिकों को तत्काल एंबुलेंस और पुलिस को सूचना देनी चाहिए तथा बचावकर्मियों के लिए रास्ता खाली रखना चाहिए। बिना प्रशिक्षण के घायल को अनावश्यक रूप से हिलाने के बजाय प्रशिक्षित सहायता बुलाना उचित है। विद्यालयों और सामाजिक संस्थाओं में प्राथमिक उपचार का प्रशिक्षण दिया जाए। प्रशासन सहायता करने वालों के प्रति सहयोगपूर्ण व्यवहार रखे और जनता को सही प्रक्रिया की जानकारी दे।

कृपया इस विषय पर संपादकीय तथा जागरूकता सामग्री प्रकाशित करें, ताकि लोग दर्शक बने रहने के बजाय जिम्मेदार नागरिक की भूमिका निभाएँ। समय पर की गई संवेदनशील सहायता किसी का जीवन बचा सकती है।

धन्यवाद।

भवदीय
अभिषेक कुमार

चरण 3: निष्कर्ष यह पत्र दुर्घटना के समय दर्शकों की संवेदनहीनता की चर्चा करते हुए तत्काल सुरक्षित सहायता, प्राथमिक उपचार के प्रशिक्षण और जनजागरण का आग्रह करता है।

त्वरित सुझाव: संपादक को पत्र में समस्या के साथ व्यावहारिक सुझाव अवश्य दें और विषय-पंक्ति को दुर्घटना के साक्षियों की उदासीनता पर केंद्रित रखें।

अथवा

4. दूरदर्शन पर किशोरों के लिए उपयुक्त कार्यक्रम भारतीय भाषाओं में उपलब्ध नहीं हैं । अंग्रेज़ी के डब किए हुए कार्यक्रम भारतीय सामाजिक परिवेश के अनुकूल नहीं होते । इस समस्या पर ध्यान आकृष्ट करते हुए निदेशक, समाचार-भारती को पत्र लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- औपचारिक पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता का पद-पता, विषय, संबोधन, मुख्य कथ्य और हस्ताक्षर क्रम से दिए जाते हैं।
- समस्या के साथ उसके कारण, किशोरों पर प्रभाव और व्यावहारिक सुझाव विनम्र तथा स्पष्ट भाषा में रखने चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और विषय की योजना यह पत्र निदेशक, समाचार-भारती को संबोधित होगा। विषय में दूरदर्शन पर भारतीय भाषाओं में किशोरोपयोगी कार्यक्रमों की आवश्यकता स्पष्ट होगी। मुख्य भाग में ऐसे कार्यक्रमों की कमी, विदेशी परिवेश वाले डब कार्यक्रमों की सीमा तथा भारतीय सामाजिक संदर्भ से जुड़े नए कार्यक्रम बनाने का अनुरोध रखा जाएगा।

चरण 2: कथ्य और भाषा का चयन पत्र में किशोरों की जिज्ञासा, संवेदनशीलता और आयु के अनुरूप मनोरंजन की आवश्यकता बतानी है। किसी भाषा की निंदा करने के स्थान पर कार्यक्रमों के सामाजिक संदर्भ और उपयोगिता पर ध्यान देना उचित है। विज्ञान, खेल, कला, स्वास्थ्य और जीवन-कौशल जैसे विषयों का सुझाव समस्या के समाधान को ठोस बनाता है।

चरण 3: पूर्ण आदर्श पत्र

24, अशोक नगर
नई दिल्ली–110018
20 मार्च, 2015
निदेशक महोदय
समाचार-भारती
नई दिल्ली
विषय: दूरदर्शन पर भारतीय भाषाओं में किशोरोपयोगी कार्यक्रमों के प्रसारण हेतु।
महोदय,
मैं आपका ध्यान दूरदर्शन पर किशोरों के लिए भारतीय भाषाओं में उपयुक्त कार्यक्रमों की कमी की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। किशोरावस्था में स्वस्थ मनोरंजन के साथ ज्ञान, सही मार्गदर्शन और रचनात्मक प्रेरणा की विशेष आवश्यकता होती है। किंतु वर्तमान में इस आयुवर्ग की रुचियों तथा आवश्यकताओं को पर्याप्त स्थान नहीं मिल रहा है।
अंग्रेज़ी से डब किए गए अनेक कार्यक्रमों का सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश भारतीय किशोरों के अनुभवों से मेल नहीं खाता। केवल संवादों का अनुवाद कर देने से पात्रों की जीवनशैली, समस्याएँ और व्यवहार हमारे परिवेश के अनुकूल नहीं हो जाते। इससे दर्शक कार्यक्रमों से आत्मीय संबंध नहीं बना पाते।
अतः निवेदन है कि हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में मौलिक कार्यक्रम तैयार करवाए जाएँ। इनमें विज्ञान, खेल, साहित्य, पर्यावरण, स्वास्थ्य और जीवन-कौशल के विषय शामिल हों। भारतीय परिवारों और विद्यालयों से जुड़ी कहानियाँ, विशेषज्ञों से संवाद तथा किशोरों की सक्रिय भागीदारी भी उपयोगी होगी। इनके प्रसारण का समय विद्यार्थियों की सुविधा के अनुसार रखा जाए।
आशा है, आप इस समस्या पर विचार कर संबंधित अधिकारियों का ध्यान आकर्षित करेंगे और आवश्यक पहल करेंगे।
धन्यवाद।
भवदीय
अमित कुमार

चरण 4: निष्कर्ष पत्र में किशोरों के लिए भारतीय भाषाओं में मौलिक, उपयोगी और भारतीय सामाजिक परिवेश से जुड़े कार्यक्रम प्रसारित करने का विनम्र अनुरोध किया गया है।

त्वरित सुझाव: पत्र में केवल कमी की शिकायत न करें; किशोरों की आवश्यकता बताकर कार्यक्रमों के विषय और प्रसारण के ठोस सुझाव भी दें।

5(क). निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए :

अंशकालिक पत्रकार से आप क्या समझते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारों का वर्गीकरण उनके कार्य-संबंध और सेवा की प्रकृति के आधार पर भी किया जाता है।
- अंशकालिक पत्रकार को सामान्यत: स्ट्रिंगर कहा जाता है; वह पूर्णकालिक वेतनभोगी कर्मचारी से भिन्न होता है।

चरण 1: कार्य-संबंध समझना अंशकालिक पत्रकार किसी समाचार-संगठन के लिए नियमित पूर्णकालिक नौकरी नहीं करता। वह आवश्यकता के अनुसार किसी क्षेत्र या स्थान की खबरें भेजता है।

चरण 2: पारिश्रमिक का आधार पहचानना उसे प्राय: भेजी गई और स्वीकृत समाचार-सामग्री के आधार पर पारिश्रमिक मिलता है। इसलिए उसकी पहचान केवल कम घंटे काम करने से नहीं, बल्कि पूर्णकालिक नियुक्ति के अभाव और सामग्री-आधारित भुगतान से होती है।

चरण 3: निष्कर्ष अंशकालिक पत्रकार या स्ट्रिंगर वह पत्रकार है जो किसी समाचार-संगठन का पूर्णकालिक कर्मचारी न होकर उसके लिए समाचार भेजता है और प्राय: प्रकाशित सामग्री के अनुसार पारिश्रमिक पाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पूर्णकालिक नियुक्ति का अभाव और समाचार-सामग्री के अनुसार पारिश्रमिक—ये दोनों बातें साथ लिखें।

5(ख). निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए :

पेज थ्री पत्रकारिता क्या है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पेज थ्री पत्रकारिता का संबंध चर्चित हस्तियों के सामाजिक जीवन और मनोरंजन-जगत की गतिविधियों से है।
- इसकी पहचान विषय-वस्तु से होती है; केवल समाचार का तीसरे पृष्ठ पर छपना इसकी परिभाषा नहीं है।

चरण 1: विषय-वस्तु पहचानना इस प्रकार की पत्रकारिता में फ़िल्मी सितारों, फैशन-जगत और उच्च समाज की पार्टियों, समारोहों, निजी जीवन तथा अन्य चमक-दमक वाली गतिविधियों को प्रमुखता मिलती है।

चरण 2: नाम का आशय स्पष्ट करना ऐसी सामग्री समाचार-पत्रों के पेज थ्री से जुड़ी रही है, इसलिए इसे यह नाम मिला। किसी राजनीतिक, आर्थिक या जनहित संबंधी खबर को केवल तीसरे पृष्ठ पर छाप देने से वह पेज थ्री पत्रकारिता नहीं बन जाती।

चरण 3: निष्कर्ष चर्चित हस्तियों, फ़िल्मी जगत तथा उच्च समाज की पार्टियों, फैशन और निजी-सामाजिक जीवन की गतिविधियों को प्रमुखता देने वाली पत्रकारिता पेज थ्री पत्रकारिता कहलाती है।

त्वरित सुझाव: पेज थ्री को सिर्फ तीसरे पन्ने का समाचार न बताएं; उत्तर में हस्तियों की जीवनशैली और सामाजिक आयोजनों का उल्लेख करें।

5(ग). निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए :

जनसंचार का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जनसंचार में संदेश व्यापक, बिखरे हुए और विविध जनसमुदाय तक पहुँचता है।

- समाचार-पत्र, रेडियो, टेलीविज़न और इंटरनेट जैसे तकनीकी माध्यम इस प्रक्रिया को संभव बनाते हैं।

चरण 1: प्राप्तकर्ता का स्वरूप समझना जनसंचार का संदेश किसी एक व्यक्ति या छोटे परिचित समूह तक सीमित नहीं रहता। वह एक साथ बड़ी संख्या में ऐसे लोगों तक पहुँचता है जो अलग-अलग स्थानों पर हो सकते हैं।

चरण 2: माध्यम की भूमिका स्पष्ट करना समाचार-पत्र, रेडियो और टेलीविज़न जैसे माध्यम सूचना, विचार और मनोरंजन को व्यापक समाज तक पहुँचाते हैं। इस प्रकार इसका प्रमुख आधार बड़े जनसमुदाय तक संदेश का तकनीकी माध्यम से प्रसार है।

चरण 3: निष्कर्ष तकनीकी जनमाध्यमों द्वारा सूचना, विचार या संदेश को व्यापक, बिखरे और विविध जनसमुदाय तक पहुँचाने की प्रक्रिया जनसंचार कहलाती है।

त्वरित सुझाव: जनसंचार की परिभाषा में व्यापक जनसमुदाय और तकनीकी माध्यम दोनों लिखें; केवल दो व्यक्तियों की बातचीत का उदाहरण न दें।

5(घ). निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए :

आल इंडिया रेडियो की स्थापना कब हुई ? आजकल यह किस संस्था के अंतर्गत है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो के इतिहास में निजी प्रसारण की शुरुआत और आल इंडिया रेडियो के नामकरण की तिथि अलग घटनाएँ हैं।
- आल इंडिया रेडियो, जिसे आकाशवाणी भी कहा जाता है, सार्वजनिक प्रसारण संस्था प्रसार भारती के अंतर्गत कार्य करता है।

चरण 1: स्थापना की तिथि लिखना आल इंडिया रेडियो की स्थापना 8 जून, 1936 को हुई। इसी दिन तत्कालीन भारतीय राज्य प्रसारण सेवा को आल इंडिया रेडियो नाम दिया गया। अतः प्रारंभिक निजी रेडियो प्रसारण की तिथि को इसके उत्तर में नहीं लिखना चाहिए।

चरण 2: वर्तमान संस्थागत संबंध बताना आल इंडिया रेडियो आज प्रसार भारती के अंतर्गत है। प्रश्न में तिथि के साथ संस्था का नाम भी माँगा गया है, इसलिए दोनों तथ्यों का उल्लेख आवश्यक है। आकाशवाणी इसी प्रसारण सेवा का भारतीय नाम है।

चरण 3: निष्कर्ष आल इंडिया रेडियो की स्थापना 8 जून, 1936 को हुई। आज यह प्रसार भारती के अंतर्गत कार्य करता है।

त्वरित सुझाव: इस दो-भाग वाले प्रश्न में पहले 8 जून, 1936 और फिर प्रसार भारती लिखें; आकाशवाणी इसका ही भारतीय नाम है।

5(ङ). निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए :

फ़ीचर के दो लक्षण लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर किसी विषय को तथ्यपूर्ण होते हुए भी रोचक, संवेदनात्मक और सहज शैली में प्रस्तुत करता है।
- इसमें केवल तात्कालिक घटना का संक्षिप्त विवरण नहीं, बल्कि विषय का मानवीय पक्ष और पृष्ठभूमि भी उभरती है।

चरण 1: प्रस्तुति का लक्षण बताना फ़ीचर की भाषा सरल, रोचक और चित्रात्मक होती है। वर्णन, अनुभव और प्रसंगों का उपयुक्त प्रयोग पाठक का ध्यान बनाए रखता है तथा विषय को जीवंत बनाता है।

चरण 2: विषय-विस्तार का लक्षण बताना फ़ीचर में विषय की पृष्ठभूमि तथा मानवीय पक्ष का विस्तार से चित्रण होता है। इसमें लेखक की रचनात्मक प्रस्तुति के लिए स्थान रहता है, पर रोचकता के लिए तथ्यों को गढ़ना स्वीकार्य नहीं होता।

चरण 3: निष्कर्ष फ़ीचर के दो लक्षण हैं: (1) उसकी भाषा सरल, रोचक और चित्रात्मक होती है। (2) उसमें विषय की पृष्ठभूमि और

मानवीय पक्ष का तथ्यपूर्ण, विस्तृत चित्रण किया जाता है।

त्वरित सुझाव: दो लक्षण माँगे जाने पर भाषा-शैली और विषय-प्रस्तुति से एक-एक स्पष्ट विशेषता लिखें; रोचकता को काल्पनिक तथ्य गढ़ना न मानें।

6. 'सामाजिक सुरक्षा' पर एक आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख किसी सामाजिक विषय का तर्कपूर्ण और क्रमबद्ध विवेचन होता है। इसमें विषय का परिचय, प्रमुख पक्ष, समस्याएँ और व्यावहारिक सुझाव एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं।
- शीर्षक संक्षिप्त और विषयानुकूल होना चाहिए। भाषा स्पष्ट तथा औपचारिक रहे और अंतिम अनुच्छेद पूरे विचार को सार्थक दिशा दे।

चरण 1: प्रारूप और विषय की सीमा निर्धारित करें 'सामाजिक सुरक्षा' विषय पर उपयुक्त शीर्षक और लेखक का नाम दें। आरंभ में विषय का अर्थ स्पष्ट करें, मध्य भाग में उसके महत्त्व और प्रमुख चुनौतियों को समझाएँ तथा अंत में व्यावहारिक उपाय और सकारात्मक विचार रखें। प्रश्न में अलग शब्द-सीमा नहीं दी गई है; इसलिए विवेचन को विषय पर केंद्रित और अनावश्यक दोहराव से मुक्त रखें।

चरण 2: विचारों का क्रम बनाएँ संकटग्रस्त नागरिक की स्थिति से विषय शुरू करें। इसके बाद असुरक्षित वर्गों, स्वास्थ्य और आय की सुरक्षा तथा सहायता पहुँचाने की प्रक्रिया पर विचार रखें। निष्कर्ष में मानवीय गरिमा और सामाजिक जिम्मेदारी को जोड़ें।

चरण 3: पूर्ण आदर्श आलेख सामाजिक सुरक्षा : सम्मानपूर्ण जीवन का आधार

लेखक : एक विद्यार्थी

मनुष्य के जीवन में बीमारी, दुर्घटना, बेरोज़गारी और वृद्धावस्था जैसी परिस्थितियाँ कभी भी आ सकती हैं। ऐसी स्थिति में भोजन, उपचार और आवास का संकट व्यक्ति का आत्मविश्वास तोड़ देता है। सामाजिक सुरक्षा वह व्यवस्था है जो कठिन समय में उसे सहारा देकर सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अवसर देती है। इसका उद्देश्य केवल आर्थिक सहायता देना नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक को असुरक्षा और उपेक्षा से बचाना भी है।

समाज में सभी लोगों की आय और अवसर समान नहीं होते। असंगठित क्षेत्र के श्रमिक, दिव्यांगजन, निराश्रित महिलाएँ और वृद्ध प्रायः अधिक असुरक्षित होते हैं। नियमित आय रुक जाने पर उनके परिवार की शिक्षा और स्वास्थ्य भी प्रभावित होते हैं। इसलिए सुलभ स्वास्थ्य सेवाएँ, दुर्घटना बीमा, वृद्धावस्था पेंशन और ज़रूरत के समय खाद्य सहायता आवश्यक हैं। श्रमिकों के लिए सुरक्षित कार्यस्थल तथा उचित पारिश्रमिक भी सामाजिक सुरक्षा के महत्त्वपूर्ण अंग हैं।

इन व्यवस्थाओं की सफलता के लिए योजनाओं की जानकारी सरल भाषा में उपलब्ध होनी चाहिए। आवेदन की जटिलता, भ्रष्टाचार और भेदभाव के कारण वास्तविक ज़रूरतमंद सहायता से वंचित न रहें। स्थानीय संस्थाएँ लाभार्थियों तक पहुँचने और शिकायतों के समाधान में सहयोग कर सकती हैं। नागरिकों को भी अपने अधिकारों के साथ सामूहिक जिम्मेदारी समझनी चाहिए।

सामाजिक सुरक्षा किसी पर उपकार नहीं, मानवीय गरिमा की रक्षा का माध्यम है। संवेदनशील शासन, जागरूक समाज और पारदर्शी व्यवस्था मिलकर ऐसा देश बना सकते हैं जहाँ संकट में पड़ा कोई व्यक्ति स्वयं को अकेला न समझे।

चरण 4: निष्कर्ष यह आलेख 'सामाजिक सुरक्षा' का अर्थ, महत्त्व, प्रमुख चुनौतियाँ और समाधान क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत करता है। शीर्षक, लेखक-नाम और सुसंगत अनुच्छेद इसके अपेक्षित प्रारूप को पूरा करते हैं।

त्वरित सुझाव: पहले चार संकेत लिख लें—अर्थ, महत्त्व, चुनौती और उपाय। फिर प्रत्येक संकेत को एक जुड़े हुए अनुच्छेद में विकसित करें; केवल नारे या बिंदुओं की सूची न लिखें।

अथवा

6. 'राष्ट्रीय एकता' पर एक आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख किसी सामाजिक विषय का तर्कपूर्ण और क्रमबद्ध विवेचन होता है। इसमें विषय का परिचय, प्रमुख पक्ष, समस्याएँ और व्यावहारिक सुझाव एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं।
- शीर्षक संक्षिप्त और विषयानुकूल होना चाहिए। भाषा स्पष्ट तथा औपचारिक रहे और अंतिम अनुच्छेद पूरे विचार को सार्थक दिशा दे।

चरण 1: प्रारूप और विषय की सीमा निर्धारित करें 'राष्ट्रीय एकता' विषय पर उपयुक्त शीर्षक और लेखक का नाम दें। आरंभ में विषय का अर्थ स्पष्ट करें, मध्य भाग में उसके महत्त्व और प्रमुख चुनौतियों को समझाएँ तथा अंत में व्यावहारिक उपाय और सकारात्मक विचार रखें। प्रश्न में अलग शब्द-सीमा नहीं दी गई है; इसलिए विवेचन को विषय पर केंद्रित और अनावश्यक दोहराव से मुक्त रखें।

चरण 2: विचारों का क्रम बनाएँ भारत की विविधता से विषय शुरू करें। उसके बाद साझा नागरिकता, एकता का महत्त्व और विभाजनकारी प्रवृत्तियों का उल्लेख करें। संवाद, समान अवसर और दैनिक व्यवहार में सम्मान जैसे उपाय देकर विषय को पूरा करें।

चरण 3: पूर्ण आदर्श आलेख राष्ट्रीय एकता : विविधता में हमारा साझा संकल्प

लेखक : एक विद्यार्थी

भारत अनेक भाषाओं, धर्मों, वेशभूषाओं और परंपराओं का देश है। यह विविधता हमारे सांस्कृतिक जीवन की समृद्धि है। राष्ट्रीय एकता का अर्थ इन भिन्नताओं को मिटाना नहीं, बल्कि उनके प्रति सम्मान रखते हुए देश के हित और सभी नागरिकों के अधिकारों के लिए मिलकर कार्य करना है। साझा नागरिकता हमें एक-दूसरे के सुख-दुख से जोड़ती है।

स्वतंत्रता के संघर्ष में विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों के लोगों ने साथ आकर त्याग किया। आज भी शिक्षा, विज्ञान, खेल और आपदा के समय सहयोग में सामूहिक शक्ति दिखाई देती है। संविधान में निहित समानता और बंधुत्व की भावना इस एकता को आधार देती है। जब हर नागरिक को न्याय और सम्मान मिलता है, तब देश के प्रति उसका विश्वास भी सुदृढ़ होता है।

सांप्रदायिकता, जातीय भेदभाव, क्षेत्रीय संकीर्णता और अफ़वाहें राष्ट्रीय एकता को चोट पहुँचाती हैं। किसी समुदाय के प्रति घृणा फैलाने से पूरे समाज में अविश्वास बढ़ता है। इसलिए मतभेदों का समाधान संवाद से होना चाहिए। किसी संदेश को आगे भेजने से पहले उसकी सत्यता जाँचना भी नागरिक जिम्मेदारी है।

विद्यालयों में विभिन्न प्रदेशों की भाषाओं और संस्कृतियों का परिचय, परस्पर यात्राएँ और सामूहिक गतिविधियाँ अपनापन बढ़ा सकती हैं। प्रशासन को अवसरों की समानता और संतुलित विकास पर ध्यान देना चाहिए। हमें अपने व्यवहार में भेदभाव छोड़कर दूसरों की मान्यताओं का आदर करना होगा। राष्ट्रीय एकता केवल नारों से नहीं बनती; वह सहयोग, संवेदनशीलता और न्यायपूर्ण आचरण से प्रतिदिन मजबूत होती है।

चरण 4: निष्कर्ष यह आलेख 'राष्ट्रीय एकता' का अर्थ, महत्त्व, प्रमुख चुनौतियाँ और समाधान क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत करता है। शीर्षक, लेखक-नाम और सुसंगत अनुच्छेद इसके अपेक्षित प्रारूप को पूरा करते हैं।

त्वरित सुझाव: पहले चार संकेत लिख लें—अर्थ, महत्त्व, चुनौती और उपाय। फिर प्रत्येक संकेत को एक जुड़े हुए अनुच्छेद में विकसित करें; केवल नारे या बिंदुओं की सूची न लिखें।

7. 'स्वच्छता-अभियान' विषय पर एक फ़ीचर लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर किसी विषय का तथ्यपरक, रोचक और मानवीय चित्र प्रस्तुत करता है। इसमें आकर्षक शीर्षक, दृश्यात्मक आरंभ और प्रभावी समापन उपयोगी होते हैं।
- स्वच्छता में व्यक्तिगत आदतें, सार्वजनिक स्थानों की सफ़ाई, कचरे का उचित निस्तारण और नागरिक सहभागिता शामिल हैं।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना शीर्षक से स्वच्छता को दैनिक जीवन से जोड़ेंगे। किसी परिचित दृश्य से आरंभ करके गंदगी की समस्या, सामूहिक प्रयास और व्यवहार में स्थायी बदलाव की आवश्यकता प्रस्तुत करेंगे। भाषा सरल तथा चित्रात्मक रखेंगे और अंत में पाठक को अपनी भूमिका पहचानने की प्रेरणा देंगे।

चरण 2: संपूर्ण आदर्श फ़ीचर साफ़ गली, स्वस्थ ज़िंदगी

सुबह की धूप गली में उतरी है। कल तक जिस मोड़ पर कचरे का ढेर था, आज वहाँ साफ़ ज़मीन दिखाई दे रही है। हाथ में झाड़ू लिए बच्चों के साथ बड़े भी जुटे हैं। यह दृश्य बताता है कि स्वच्छता-अभियान की असली शक्ति लोगों की भागीदारी है।

गंदगी केवल आँखों को नहीं अखरती; वह हमारे स्वास्थ्य को भी प्रभावित करती है। खुले में पड़ा कचरा, रुकी नालियाँ और दूषित पानी बीमारियों का कारण बन सकते हैं। घर चमकाकर कूड़ा सड़क पर डाल देना सफ़ाई नहीं है। सड़क, पार्क और सार्वजनिक शौचालय भी हमारी सामूहिक ज़िम्मेदारी हैं।

बदलाव की शुरुआत छोटी आदतों से होती है। गीला और सूखा कचरा अलग रखें, निर्धारित स्थान पर ही कूड़ा डालें और सार्वजनिक जगहों पर थूकने से बचें। उपयोगी वस्तुओं को दोबारा काम में लाएँ। विद्यालयों और मोहल्लों में नियमित सफ़ाई तथा जागरूकता के प्रयास हों। सफ़ाईकर्मियों के श्रम का सम्मान भी इस अभियान का आवश्यक हिस्सा है।

स्थानीय निकायों को कचरा उठाने और निस्तारण की व्यवस्था सुचारु रखनी होगी। नागरिक शिकायत दर्ज कराएँ और समाधान की जानकारी भी लेते रहें। केवल तस्वीर खिंचवाने भर की सफ़ाई से स्थिति नहीं बदलेगी।

झाड़ू रख देने के बाद भी अभियान समाप्त नहीं होता। असली सफलता तब है, जब अगले दिन उसी मोड़ पर कचरा फिर जमा न हो। स्वच्छता उत्सव की एक तारीख़ नहीं, हर दिन निभाई जाने वाली आदत बने।

चरण 3: निष्कर्ष इस फ़ीचर में स्वच्छता को जनभागीदारी, नागरिक आदतों और प्रशासनिक व्यवस्था से जोड़ते हुए स्थायी बदलाव का संदेश दिया गया है।

त्वरित सुझाव: फ़ीचर का आरंभ किसी सजीव दृश्य से करें और अंत में उसी दृश्य को विषय के संदेश से जोड़ दें।

अथवा

7. 'सजग नागरिक' विषय पर एक फ़ीचर लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सजग नागरिक अपने अधिकारों के साथ कर्तव्यों को भी समझता है और सार्वजनिक हित के प्रति उत्तरदायी रहता है।
- फ़ीचर में जीवन से जुड़ा दृश्य, विषय का मानवीय पक्ष और विचारोत्तेजक समापन आवश्यक हैं।

चरण 1: प्रारूप और विचारों की योजना एक रोज़मर्रा की घटना से आरंभ करके सजग नागरिक की पहचान स्पष्ट करेंगे। यातायात, सार्वजनिक संपत्ति, सूचना की जाँच और लोकतांत्रिक भागीदारी के उदाहरण देंगे। किसी वास्तविक व्यक्ति या घटना के नाम पर काल्पनिक तथ्य नहीं जोड़ेंगे। समापन में छोटी ज़िम्मेदारियों का सामूहिक महत्व बताएँगे।

चरण 2: संपूर्ण आदर्श फ़ीचर शहर जागता है, जब नागरिक जागता है

चौराहे पर लाल बत्ती जल रही है। सड़क लगभग खाली है, फिर भी एक साइकिल सवार रुक जाता है। पीछे खड़े बच्चे उसे देखते हैं। किसी भाषण के बिना उन्हें एक सीख मिल गई है—नियमों का पालन निगरानी के डर से नहीं, अपनी ज़िम्मेदारी समझकर करना चाहिए। यही सजग नागरिक की पहचान है।

नागरिकता केवल पहचान-पत्र रखने का नाम नहीं। यह अपने आसपास की समस्याओं को देखना और उनके समाधान में हिस्सा लेना भी है। टूटे नल से बहता पानी रोकना, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना और ज़रूरतमंद की सहायता करना छोटी बातें लग सकती हैं, पर इन्हीं से समाज का चरित्र बनता है।

सजगता का अर्थ हर सूचना को सच मान लेना भी नहीं है। मोबाइल पर मिला संदेश आगे भेजने से पहले उसकी जाँच करना आवश्यक है। अफ़वाह किसी व्यक्ति की प्रतिष्ठा और समाज की शांति को चोट पहुँचा सकती है। विवेकपूर्ण नागरिक असहमति व्यक्त करता है, लेकिन

दूसरों की गरिमा और अधिकारों का सम्मान भी करता है।

लोकतंत्र में उसकी भूमिका मतदान तक सीमित नहीं रहती। वह जनसमस्याओं की जानकारी रखता है, संबंधित अधिकारी तक शिकायत पहुँचाता है और सार्वजनिक कामों के बारे में सवाल पूछता है। अधिकारों की माँग करते समय वह अपने कर्तव्यों से मुँह नहीं मोड़ता।

एक व्यक्ति का सही व्यवहार दूसरे को प्रेरित कर सकता है। चौराहे पर रुकी वह साइकिल अब आगे बढ़ चुकी है, पर उसका संदेश पीछे रह गया है। शहर को जागरूक बनाने की शुरुआत हमारे अपने निर्णय से होती है।

चरण 3: निष्कर्ष फ़ीचर सजग नागरिकता को नियमपालन, विवेकपूर्ण सूचना-व्यवहार, अधिकारों की रक्षा और सार्वजनिक उत्तरदायित्व के रूप में प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: सजग नागरिक पर लिखते समय अधिकारों और कर्तव्यों दोनों के ठोस उदाहरण दें, केवल उपदेश न लिखें।

---

8. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

खेती न किसान को भिखारी को न भीख बलि,
बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी ।।
जीविका विहीन लोग सीद्यमान सोचबस
कहें एक एकन सों कहाँ जाई का करी ।।
बेदहूँ पुरान कही, लोकहूँ विलोकियत
साँकरे सबै पै राम रावरें कृपा करी ।।
दारिद दसानन दबाई दुनी, दीनबन्धु,
दुरित-दहन देखि तुलसी हहा करी ।।

[8 अंक]

8(क). प्रकृति और शासन की विषमता के कारणों का उल्लेख कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में आजीविका का संकट समाज के विभिन्न वर्गों की दशा के माध्यम से व्यक्त हुआ है।
- प्रकृति और शासन की विषमता का प्रभाव खेती, व्यापार, भिक्षा और नौकरी के अभाव से समझना चाहिए; पाठ से बाहर का कोई विशेष ऐतिहासिक कारण नहीं जोड़ना चाहिए।

चरण 1: प्रकृति की विषमता का प्रभाव "खेती न किसान को से पता चलता है कि किसान खेती का लाभ नहीं पा रहा है। प्राकृतिक प्रतिकूलता के कारण कृषि से जीवन-निर्वाह कठिन हो गया है। उत्पादन और आजीविका का आधार डगमगाने से दूसरे वर्ग भी प्रभावित हैं। काव्यांश में किसी विशेष प्राकृतिक आपदा का नाम नहीं दिया गया है।

चरण 2: शासन की विषमता और व्यापक संकट शासन की अव्यवस्था और जनहित की उपेक्षा के कारण रोज़गार तथा आर्थिक जीवन संकटग्रस्त हैं। "बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी में व्यापार और नौकरी का अभाव स्पष्ट है। भिखारी को भीख तक नहीं मिलती। इस प्रकार किसान, व्यापारी, सेवक और भिखारी सभी जीविकाहीन होकर दुखी हैं तथा एक-दूसरे से पूछते हैं कि कहाँ जाएँ और क्या करें।

चरण 3: निष्कर्ष प्राकृतिक प्रतिकूलता तथा शासन की अव्यवस्था से कृषि, व्यापार और रोज़गार बाधित हैं; इसी कारण सभी वर्ग दारिद्र्य और आजीविका के संकट से पीड़ित हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में किसान, व्यापारी और चाकर की दशा को काव्यांश के शब्दों से जोड़ें; अनुल्लिखित आपदा का नाम न दें।

8(ख). तुलसीदास को इस दुरवस्था में किसका भरोसा है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलसीदास की भक्ति में राम दीनबंधु हैं, अर्थात दुखी और असहाय लोगों के सहायक हैं।
- उत्तर में भरोसे का आधार वेद-पुराण और लोकानुभव बताना चाहिए, क्योंकि काव्यांश स्वयं दोनों का उल्लेख करता है।

चरण 1: भरोसे का पात्र पहचानना इस दुरवस्था में तुलसीदास को भगवान राम का भरोसा है। वे "दीनबन्धु कहकर राम को पुकारते हैं और संकटग्रस्त संसार पर उनकी कृपा की याचना करते हैं। दारिद्र्य से दबे लोगों को कोई सांसारिक सहारा दिखाई नहीं देता, इसलिए कवि की आस्था राम की करुणा में टिकती है।

चरण 2: भरोसे का कारण स्पष्ट करना "बेदहूँ पुरान कही, लोकहूँ विलोकियत के अनुसार वेद-पुराणों में राम की संकटमोचक कृपा का वर्णन है और लोक में भी उसका अनुभव किया जाता है। "साँकरे सबै पै राम रावरें कृपा करी से कवि बताता है कि संकट में राम सब पर कृपा करते हैं। इसी करुणामय स्वभाव के कारण तुलसी को विश्वास है कि राम दारिद्र्य और दुख से पीड़ित लोगों का उद्धार करेंगे।

चरण 3: निष्कर्ष तुलसीदास को दीनबंधु राम का भरोसा है, क्योंकि वे संकट में सबकी सहायता करते हैं; उनकी कृपा का प्रमाण वेद-पुराण और लोकानुभव दोनों देते हैं।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के दोनों हिस्से लिखें—किसका भरोसा है और क्यों; कारण में वेद-पुराण तथा लोकानुभव अवश्य जोड़ें।

8(ग). रावण की तुलना किससे की गई है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य में समान गुणों के आधार पर एक वस्तु का दूसरी वस्तु से साम्य स्थापित किया जाता है।
- यहाँ दरिद्रता की विनाशकारी शक्ति को रावण के अत्याचार से जोड़ा गया है।

चरण 1: तुलना की पहचान काव्यांश में रावण की तुलना दरिद्रता से की गई है। "दारिद दसानन दबाई दुनी में दरिद्रता को ही दशानन अर्थात रावण के रूप में दिखाया गया है। दारिद्र्य और रावण को अलग-अलग बताने के स्थान पर एक रूप दे दिया गया है, इसलिए यहाँ रूपक का प्रयोग भी प्रभावशाली है।

चरण 2: तुलना का कारण जिस प्रकार रावण के अत्याचार से संसार पीड़ित था, उसी प्रकार गरीबी ने समूची दुनिया को दबा रखा है। किसान को खेती, व्यापारी को व्यापार और सेवक को नौकरी नहीं मिल रही। आजीविका छिन जाने से लोग दुःखी तथा असहाय हैं। इस व्यापक कष्ट और विनाशकारी प्रभाव के कारण दरिद्रता को रावण के समान बताया गया है।

चरण 3: निष्कर्ष दरिद्रता ही रावण है, क्योंकि रावण के अत्याचार की तरह वह सारे संसार को पीड़ित और असहाय बना रही है।

त्वरित सुझाव: "दारिद दसानन को आधार बनाकर तुलना और उसका साझा गुण, दोनों स्पष्ट करें।

8(घ). आशय स्पष्ट कीजिए :
साँकरे सबै पै राम रावरें कृपा करी । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भावार्थ लिखते समय कठिन शब्दों का अर्थ और पूरी पंक्ति का अभिप्राय जोड़ना चाहिए।
- राम के प्रति विश्वास का आधार वेद-पुराण तथा लोक में दिखाई देने वाले उदाहरण हैं।

चरण 1: शब्दार्थ और संबोधन "साँकरे का अर्थ संकट में तथा "रावरें का अर्थ आपकी है। कवि राम को संबोधित करके कहता है कि संकट में पड़े हुए सभी लोगों पर आपने कृपा की है। राम यहाँ दीनों के सहायक और दुःख दूर करने वाले आश्रय के रूप में सामने आते हैं।

चरण 2: पंक्ति का आशय तुलसीदास का आशय है कि वेद-पुराण राम की संकटमोचक कृपा का वर्णन करते हैं और लोकजीवन में भी यह बात अनुभव की जाती है। इसलिए आज जब गरीबी तथा आजीविका के अभाव से समस्त समाज दुःखी है, तब कवि को राम की करुणा पर विश्वास है। उनकी प्रार्थना है कि पहले की तरह राम वर्तमान विपत्ति से पीड़ित लोगों की भी रक्षा करें और उनका दुःख दूर करें।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति में राम की सर्वजनहितकारी कृपा पर अटूट विश्वास और संकटग्रस्त समाज के उद्धार की प्रार्थना व्यक्त हुई है।

त्वरित सुझाव: भावार्थ में "साँकरे का अर्थ बताकर राम की कृपा को पूरे समाज के संकट से जोड़ें।

अथवा

8. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

बात सीधी थी पर एक बार
भाषा के चक्कर में
ज़रा टेढ़ी फँस गई ।
उसे पाने की कोशिश में
भाषा को उलटा पलटा
तोड़ा मरोड़ा
घुमाया फिराया
कि बात या तो बने
या फिर भाषा से बाहर आए –
लेकिन इससे भाषा के साथ-साथ
बात और भी पेचीदा होती चली गई ।
सारी मुश्किल को धैर्य से समझे बिना
मैं पेंच को खोलने के बजाए
उसे बेतरह कसता चला जा रहा था
क्योंकि इस करतब पर मुझे
साफ़ सुनाई दे रही थी
तमाशबीनों की शाबाशी और वाह वाह । [8 अंक]

8(क). बात को धैर्य से समझने से कवि का क्या आशय है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सफल अभिव्यक्ति के लिए पहले कथ्य को स्पष्ट रूप से समझना आवश्यक है।
- सहज भाषा भाव को स्पष्ट करती है; केवल शब्दों की कलाबाजी उसे उलझाती है।

चरण 1: धैर्य से समझने का अर्थ बात को धैर्य से समझने का आशय है कि कवि जिस विचार या अनुभव को कहना चाहता है, उसकी प्रकृति और अर्थ को शांत मन से समझे। उसे यह पहचाना चाहिए कि बात की वास्तविक माँग क्या है और उसे व्यक्त करने के लिए कैसी भाषा उपयुक्त होगी। जल्दबाजी में शब्दों को तोड़ना-मरोड़ना समस्या का समाधान नहीं है।

चरण 2: काव्यांश से पुष्टि कवि स्वीकार करता है कि वह पेंच खोलने के स्थान पर उसे और कसता जा रहा था। अर्थात कठिनाई के

कारण को समझे बिना वह भाषा के साथ नए प्रयोग करता रहा। दर्शकों की वाहवाही ने भी उसका ध्यान मूल बात से हटा दिया। धैर्य का अर्थ है इस दिखावे से बचकर बात को सहज, स्वाभाविक और संप्रेषणीय रूप में सामने लाना।

चरण 3: निष्कर्ष कवि का आशय कथ्य की मूल भावना को समझकर उसके अनुकूल सरल और स्वाभाविक भाषा चुनने से है।

त्वरित सुझाव: "पेंच खोलने और "कसने के अंतर को समझाएँ; इससे धैर्य और कलाबाजी का अंतर स्पष्ट होगा।

8(ख). बात और भाषा परस्पर एक-दूसरे से कैसे सम्बद्ध हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बात अभिव्यक्त किया जाने वाला विचार या भाव है और भाषा उसे व्यक्त करने का माध्यम है।
- कथ्य और अभिव्यक्ति का संतुलन ही स्पष्ट तथा प्रभावी संप्रेषण संभव बनाता है।

चरण 1: परस्पर संबंध बात और भाषा का संबंध भाव तथा उसकी अभिव्यक्ति का है। मन में उपस्थित विचार को भाषा शब्दों का रूप देकर दूसरों तक पहुँचाती है। बात भाषा को अर्थ देती है और भाषा बात को व्यक्त रूप प्रदान करती है। इसलिए अभिव्यक्ति की सफलता के लिए दोनों का एक-दूसरे के अनुकूल होना आवश्यक है।

चरण 2: कविता में संबंध का परिणाम काव्यांश में बात मूलत: सीधी थी, पर कवि ने भाषा को उलटा-पलटा, तोड़ा-मरोड़ा और घुमाया-फिराया। इससे भाषा के साथ बात भी पेचीदा हो गई। स्पष्ट है कि भाषा की अनावश्यक जटिलता कथ्य की स्पष्टता को भी प्रभावित करती है। सहज बात के लिए सहज भाषा चुनने पर ही पाठक उसका मूल आशय समझ सकता है और संप्रेषण सफल होता है।

चरण 3: निष्कर्ष बात और भाषा परस्पर पूरक हैं; भाव के अनुरूप स्वाभाविक भाषा ही बात को स्पष्ट और प्रभावशाली बनाती है।

त्वरित सुझाव: पहले बात को कथ्य और भाषा को माध्यम बताएँ, फिर कविता से उनके संबंध का परिणाम जोड़ें।

8(ग). बात पेचीदा कब हो जाती है ? क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अभिव्यक्ति में कृत्रिमता बढ़ने पर सरल विचार भी कठिन हो सकता है।
- वाहवाही की इच्छा रचनाकार को कथ्य से हटाकर भाषा के प्रदर्शन की ओर ले जा सकती है।

चरण 1: बात कब पेचीदा होती है बात तब पेचीदा हो जाती है जब उसे सहज ढंग से कहने के बजाय भाषा के चक्कर में उलझाया जाता है। शब्दों को बार-बार उलटने-पलटने, तोड़ने-मरोड़ने और घुमाने-फिराने से सरल कथ्य भी स्पष्ट नहीं रह जाता। कवि ने स्वयं माना है कि इन प्रयासों के कारण भाषा के साथ-साथ बात भी अधिक उलझती चली गई।

चरण 2: पेचीदगी का मूल कारण इसका कारण है समस्या को धैर्य से समझे बिना केवल भाषिक करतब दिखाना। कवि मूल बात की आवश्यकता समझने के स्थान पर अभिव्यक्ति का पेंच और कसता रहा। तमाशबीनों की शाबाशी तथा वाहवाही सुनकर वह इसी प्रदर्शन में लगा रहा। इस प्रकार सहज संप्रेषण का उद्देश्य पीछे छूट गया और दिखावटी भाषा ने बात को समझने में कठिन बना दिया।

चरण 3: निष्कर्ष अनावश्यक भाषिक कलाबाजी और प्रशंसा के मोह में कथ्य को धैर्य से न समझने पर बात पेचीदा हो जाती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में समय या स्थिति के साथ कारण भी लिखें; भाषिक उलझाव और वाहवाही दोनों का उल्लेख करें।

8(घ). आशय स्पष्ट कीजिए :

भाषा के चक्कर में ज़रा टेढ़ी फँस गई । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य-पंक्ति का आशय मूल भाव को सरल शब्दों में खोलना है।
- अलंकरण या शब्द-प्रदर्शन तभी उपयोगी है जब वह कथ्य को स्पष्ट रखने में सहायक हो।

चरण 1: पंक्ति का प्रत्यक्ष अर्थ "भाषा के चक्कर में ज़रा टेढ़ी फँस गई का अर्थ है कि कहने की बात तो सरल थी, पर उसे व्यक्त करने के लिए किए गए अनावश्यक भाषिक प्रयोगों ने उसे उलझा दिया। बात की सहजता शब्दों की कलाबाजी में खो गई और जो भाव सीधे कहा जा सकता था, वही समझने में कठिन हो गया।

चरण 2: निहित संदेश कवि ने बात को पाने के लिए भाषा को उलटा-पलटा और तोड़ा-मरोड़ा, लेकिन इससे कठिनाई कम होने के स्थान पर बढ़ी। यहाँ चेतावनी है कि केवल भाषा के चमत्कार से कविता या अभिव्यक्ति प्रभावशाली नहीं बनती। भाषा को भाव के अनुकूल होना चाहिए। जब रचनाकार मूल आशय की जगह प्रदर्शन पर ध्यान देता है, तब अभिव्यक्ति अपने लक्ष्य से भटककर पेचीदा हो जाती है।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति सरल कथ्य के कृत्रिम भाषा में उलझ जाने को दिखाती है और सहज, स्पष्ट अभिव्यक्ति की आवश्यकता बताती है।

त्वरित सुझाव: शाब्दिक अर्थ तक सीमित न रहें; भाषा के प्रदर्शन से कथ्य की सहजता खोने का संदेश भी लिखें।

---

9. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

प्रभु प्रलाप सुनि कान बिकल भए वानर निकर ।

आइ गयउ हनुमान, जिमि करुना महँ वीर रस ।। [6 अंक]

9(क). काव्य-पंक्तियों का भाव-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाव-सौन्दर्य में प्रसंग की अनुभूति और उससे उत्पन्न रस का विवेचन होता है।
- यहाँ राम का विलाप करुणा जगाता है और हनुमान का आगमन आशा तथा उत्साह उत्पन्न करता है।

चरण 1: करुण भाव का चित्रण लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर राम अत्यंत व्याकुल होकर विलाप कर रहे हैं। प्रभु का यह प्रलाप सुनकर वानर-समूह भी विकल हो उठता है। अपने प्रिय भाई के लिए राम का दुःख उनके कोमल, मानवीय और स्नेहमय रूप को प्रकट करता है। इस सामूहिक व्यथा से वातावरण करुण रस में डूब जाता है।

चरण 2: आशा और उत्साह का संचार इसी शोकपूर्ण वातावरण में हनुमान आ पहुँचते हैं। उनका आगमन ऐसा प्रतीत होता है मानो करुण रस के बीच वीर रस मूर्त रूप लेकर आ गया हो। इससे निराश वानरों में आशा जागती है और लक्ष्मण के बचने की संभावना से उत्साह पैदा होता है। करुणा से वीरता तथा निराशा से आशा की ओर होने वाला यह प्रभावशाली भाव-परिवर्तन काव्यांश का मुख्य सौन्दर्य है।

चरण 3: निष्कर्ष राम और वानरों की करुण व्याकुलता के बीच हनुमान का आगमन आशा तथा वीरता का संचार करता है; यही पंक्तियों का भाव-सौन्दर्य है।

त्वरित सुझाव: भाव-सौन्दर्य में पहले करुण वातावरण और फिर हनुमान के आगमन से आए भाव-परिवर्तन को स्पष्ट करें।

9(ख). प्रयुक्त दो अलंकारों के उदाहरण चुनकर उनके सौंदर्य पर टिप्पणी कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुप्रास में एक वर्ण की आवृत्ति से काव्य में ध्वनि-सौंदर्य उत्पन्न होता है।
- उपमा में किसी वस्तु या स्थिति की तुलना समान गुण वाली दूसरी वस्तु या स्थिति से की जाती है।

चरण 1: अनुप्रास का उदाहरण और प्रभाव 'प्रभु प्रलाप' में 'प्र' ध्वनि की आवृत्ति से अनुप्रास अलंकार है। यह ध्वनि-साम्य राम के शोकपूर्ण प्रलाप को लयात्मक और प्रभावशाली बनाता है। राम का विलाप सुनकर वानर-समूह के व्याकुल हो जाने का वर्णन करुण वातावरण को और गहरा करता है।

चरण 2: उपमा का उदाहरण और प्रभाव 'आइ गयउ हनुमान, जिमि करुना महँ वीर रस' में उपमा अलंकार है। यहाँ हनुमान के आगमन की तुलना करुण रस के बीच वीर रस के प्रकट होने से की गई है; 'जिमि' उपमावाचक शब्द है। इससे स्पष्ट होता है कि हनुमान का आना शोकाकुल वातावरण में साहस, उत्साह और आशा का संचार करता है।

चरण 3: निष्कर्ष अनुप्रास से ध्वनि और लय का सौंदर्य तथा उपमा से शोक के बीच हनुमान के आशापूर्ण आगमन का प्रभाव उभरता है।

त्वरित सुझाव: पहले उदाहरण लिखें, फिर अलंकार की पहचान और उसी प्रसंग में उसका प्रभाव बताएँ।

9(ग). काव्यांश की भाषा-शैली की दो विशेषताएँ लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य की भाषा उसके शब्दरूपों से तथा शैली कथन के ढंग से पहचानी जाती है।
- इस प्रसंग में राम का विलाप करुण भाव और हनुमान का आगमन उत्साह प्रकट करता है।

चरण 1: सहज और भावानुकूल अवधी काव्यांश की भाषा सरल, सरस और भावानुकूल अवधी है। 'सुनि', 'भए', 'आइ गयउ', 'जिमि' तथा 'महँ' जैसे शब्द इसके अवधी रूप को स्पष्ट करते हैं। ये प्रचलित और प्रवाहपूर्ण शब्द राम की व्याकुलता तथा वानरों की बेचैनी को सीधे व्यक्त करते हैं। छोटे कथन में पूरे वातावरण का चित्र उपस्थित हो जाता है।

चरण 2: लयात्मक और रसात्मक शैली अभिव्यक्ति संक्षिप्त, लयात्मक तथा अलंकारपूर्ण है। 'प्रभु प्रलाप' का ध्वनि-साम्य कथन को संगीतमय बनाता है। 'जिमि करुना महँ वीर रस' की उपमा शोक के बीच हनुमान के आगमन से आए उत्साह को मूर्त करती है। इस प्रकार शैली में करुण भाव से वीर भाव की ओर प्रभावशाली परिवर्तन दिखाई देता है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश की प्रमुख विशेषताएँ सहज अवधी भाषा और लयात्मक, अलंकारपूर्ण रसात्मक शैली हैं।

त्वरित सुझाव: भाषा बताते समय अवधी के शब्द और शैली बताते समय काव्यांश से एक प्रभावकारी प्रयोग दें।

अथवा

9. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

हँसते हैं पौधे लघु भार
शस्य अपार
हिल-हिल, खिल-खिल
हाथ हिलाते
तुझे बुलाते,
विप्लव-रव से छोटे ही हैं शोभा पाते । [6 अंक]

9(क). काव्यांश का शिल्प-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिल्प-सौंदर्य में भाषा, अलंकार, लय, बिंब और अभिव्यक्ति के ढंग का विवेचन किया जाता है।
- प्रकृति के माध्यम से छोटे और साधारण जनों की प्रसन्नता का चित्र प्रस्तुत हुआ है।

चरण 1: मानवीकरण और सजीव बिंब पौधों को हँसते, हाथ हिलाते और बादल को बुलाते हुए दिखाकर मानवीकरण अलंकार का सुंदर प्रयोग किया गया है। पौधों का हवा में हिलना मनुष्य के स्वागतपूर्ण संकेत में बदल गया है। इस दृश्य-बिंब से नन्हे पौधों की प्रसन्नता और बादलों के प्रति आत्मीयता सजीव हो उठती है।

चरण 2: पुनरुक्ति, लय और भाषा 'हिल-हिल, खिल-खिल' में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है। शब्दों की आवृत्ति पौधों की गति और उल्लास को श्रव्य लय देती है। छोटी-बड़ी पंक्तियों वाले मुक्तछंद में 'हिलाते-बुलाते' की ध्वनि-संगति भी संगीतात्मकता लाती है। 'शस्य', 'विप्लव-रव' और 'शोभा' जैसे शब्द खड़ी बोली की काव्यात्मक अभिव्यक्ति को प्रभावशाली बनाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष मानवीकरण, पुनरुक्तिप्रकाश, गतिशील बिंब और मुक्तछंद की लय काव्यांश के शिल्प को आकर्षक बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: शिल्प के उत्तर में भावार्थ दोहराने के बजाय अलंकार, शब्द-प्रयोग और लय के उदाहरण दें।

9(ख). काव्यांश का भाव-सौन्दर्य समझाइए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाव-सौंदर्य में कविता के केंद्रीय भाव और उसके मार्मिक प्रभाव को समझाया जाता है।
- बादल का विप्लव-रव परिवर्तन का संकेत है और छोटे पौधे साधारण जनों के प्रतीक हैं।

चरण 1: प्रकृति के उल्लास का चित्र बादलों के आने पर छोटे पौधे और अपार फसल हर्षित हो उठते हैं। हवा में झूमते पौधे ऐसे लगते हैं मानो वे हँस रहे हों और हाथ हिलाकर बादलों को अपने पास बुला रहे हों। यह चित्र बादल और धरती की वनस्पतियों के आत्मीय संबंध को व्यक्त करता है। वर्षा उनके पोषण और नए जीवन की आशा जगाती है।

चरण 2: परिवर्तन से छोटे जनों का हित 'विप्लव-रव' क्रांति अथवा बड़े सामाजिक परिवर्तन की गर्जना का संकेत है। छोटे पौधों के माध्यम से कवि सामान्य, वंचित और श्रमशील जनों की आशा प्रकट करता है। वे परिवर्तन का स्वागत करते हैं, क्योंकि उससे उनके जीवन में विकास और सम्मान की संभावना बनती है। 'छोटे ही हैं शोभा पाते' में इसी जनपक्षधर दृष्टि और आशावादी भाव की सुंदर अभिव्यक्ति हुई है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रकृति के उल्लास के साथ साधारण जनों की परिवर्तन से जुड़ी आशा और उन्नति की कामना काव्यांश का भाव-सौंदर्य है।

त्वरित सुझाव: छोटे पौधों के प्रत्यक्ष दृश्य को समझाकर उसे सामान्य जनों की आशा से जोड़ें।

9(ग). प्रयुक्त भाषा की दो विशेषताएँ लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषा की विशेषताओं में शब्दावली, सहजता, चित्रात्मकता और ध्वनि-प्रभाव का उल्लेख किया जाता है।
- विशेषता के साथ उसी काव्यांश का उदाहरण देने से उत्तर स्पष्ट और प्रमाणपूर्ण बनता है।

चरण 1: सहज खड़ी बोली और तत्सम शब्दावली काव्यांश की भाषा साहित्यिक खड़ी बोली है। 'हँसते हैं', 'हाथ हिलाते' और 'तुझे बुलाते' जैसे सहज शब्दों के साथ 'शस्य', 'विप्लव-रव' तथा 'शोभा' जैसे संस्कृतनिष्ठ शब्द आए हैं। इस मेल से भाषा में सरलता के साथ गंभीरता और काव्यात्मक प्रभाव उत्पन्न होता है। कवि प्रकृति के साधारण दृश्य के माध्यम से व्यापक परिवर्तन का भाव व्यक्त करता है।

चरण 2: चित्रात्मक और लयपूर्ण अभिव्यक्ति भाषा चित्रात्मक तथा ध्वन्यात्मक है। पौधों के 'हाथ हिलाते' और 'तुझे बुलाते' कहने से उनका मानवीय रूप आँखों के सामने आ जाता है। 'हिल-हिल, खिल-खिल' की आवृत्ति झूमते पौधों की गति और प्रसन्नता का अनुभव कराती है। शब्दों का यह लयपूर्ण प्रयोग पूरे दृश्य को सजीव, गतिशील और आनंदमय बनाता है।

चरण 3: निष्कर्ष इसकी दो प्रमुख भाषागत विशेषताएँ तत्सम शब्दों से समृद्ध सहज खड़ी बोली और चित्रात्मक, लयपूर्ण अभिव्यक्ति हैं।

त्वरित सुझाव: दो विशेषताएँ अलग-अलग लिखें और हर विशेषता के समर्थन में काव्यांश का शब्द अवश्य दें।

10(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' – कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हरिवंशराय बच्चन की कविता में ढलता दिन समय की गतिशीलता और सीमित अवसरों का बोध कराता है।
- प्रियजनों से मिलने की आशा सक्रियता बढ़ाती है, जबकि अकेलापन व्यक्ति को शिथिल करता है।

चरण 1: समय और मिलन की उत्कंठा 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' में कवि समय के निरंतर बीतने तथा जीवन में प्रेम और आत्मीय संबंधों के महत्त्व को व्यक्त करता है। दिन ढलने पर घर लौटने वाला पथिक अपने प्रियजनों से मिलने की चाह में कदम तेज कर लेता है। उसे लगता है कि रात होने से पहले मंजिल तक पहुँचना आवश्यक है। इस प्रकार समय की कमी का अनुभव और मिलन की आशा उसके प्रयास में गति भर देते हैं।

चरण 2: पक्षियों का उदाहरण कवि पक्षियों के माध्यम से यही भाव और स्पष्ट करता है। घोंसलों में बच्चे उनकी प्रतीक्षा कर रहे होंगे; अपने बच्चों की इस व्याकुल प्रतीक्षा का विचार पक्षियों के पंखों में चंचलता भर देता है। वे तेजी से नीड़ की ओर लौटते हैं। यह प्रसंग दिखाता है कि किसी आत्मीय का इंतजार जीवन को लक्ष्य देता है और श्रम के बाद लौटने की खुशी जगाता है।

चरण 3: कवि का अकेलापन और केंद्रीय संदेश इसके विपरीत कवि सोचता है कि उसकी प्रतीक्षा में कौन व्याकुल होगा और वह किससे मिलने के लिए प्रयास करे। आत्मीय संबंध के अभाव का यह विचार उसके कदम शिथिल कर देता है और हृदय को व्याकुल करता है। ढलते दिन का आवर्ती बिंब जीवन की क्षणभंगुरता को गहरा करता है। कविता का प्रतिपाद्य है कि प्रेम, अपनापन और मिलने की आशा मनुष्य को सक्रिय रखते हैं; उनके अभाव में समय का बीतना अधिक पीड़ादायक लगता है।

चरण 4: निष्कर्ष कविता समय के तीव्र प्रवाह के साथ यह उद्घाटित करती है कि आत्मीयता जीवन को गति और लक्ष्य देती है, जबकि अकेलापन उदासी और शिथिलता उत्पन्न करता है।

त्वरित सुझाव: प्रतिपाद्य में पथिक, पक्षियों और अकेले कवि की स्थितियाँ जोड़कर एक केंद्रीय विचार स्पष्ट करें।

10(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

"पतंग लूटने में ख़तरनाक परिस्थितियों का सामना करके बच्चे चुनौतियों का सामना करना सीखते हैं ।" – इस कथन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि आलोक धन्वा पतंग उड़ाते बच्चों के साहस, उमंग और निर्भयता का चित्र प्रस्तुत करते हैं।
- खेल में आने वाली कठिनाइयाँ बच्चों की सक्रियता और आत्मविश्वास को प्रकट करती हैं।

चरण 1: कथन का काव्य-संदर्भ पतंग के पीछे दौड़ते बच्चे ऊँचाई और गिरने के भय से मुक्त दिखाई देते हैं। उनका ध्यान अपनी पतंग और उसे पाने की इच्छा पर केंद्रित रहता है। कविता में यह तन्मयता बालमन की सजीवता, उत्साह और अदम्य आकांक्षा को व्यक्त करती है। जोखिम के सामने उनका साहस जीवन के प्रति उनके गहरे आकर्षण का संकेत है।

चरण 2: चुनौतियों का सामना करने की सीख पतंग लूटने की कोशिश में बच्चे बदलती परिस्थितियों को पहचानना, तुरंत निर्णय लेना और असफल होने पर फिर प्रयास करना सीखते हैं। साथियों के साथ दौड़ने और होड़ करने से उनकी सजगता, फुर्ती तथा आत्मविश्वास बढ़ते हैं। इस दृष्टि से खेल जीवन की कठिनाइयों से जूझने का सहज अभ्यास बनता है। लक्ष्य की ओर बढ़ते रहने का संकल्प भी इसी अनुभव से पुष्ट होता है। भय पर विजय और निरंतर प्रयत्न की प्रवृत्ति आगे भी चुनौतियों का सामना करने में सहायक होती है। कविता का आशय साहस और जीवट की प्रशंसा है; वास्तविक जीवन में खतरनाक स्थानों पर असावधानी को प्रोत्साहन देना उसका उद्देश्य नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष इस कथन से मैं सहमत हूँ कि पतंग के खेल में दिखाई देने वाला साहस, सजगता और बार-बार प्रयास करने का उत्साह बच्चों को जीवन की चुनौतियों से जूझना सिखाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पतंग के पीछे दौड़ने को साहस, त्वरित निर्णय और पुनः प्रयास की सीख से जोड़ें।

10(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

"कविता के बहाने सब घर एक कर देने के माने क्या होते हैं" – स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण की कविता में बच्चों का खेल कविता की असीम संभावनाओं को समझाने का माध्यम है।
- कविता मनुष्य को घर, समाज और अन्य संकीर्ण सीमाओं के पार जोड़ती है।

चरण 1: बच्चों के खेल का संकेत बच्चे खेलते समय अपने-पराए घर का भेद नहीं करते। खेल का आनंद उन्हें एक-दूसरे के निकट ले आता है और सब घर उनके लिए अपने समान हो जाते हैं। कवि ने इसी सहज आत्मीयता को कविता के स्वभाव से जोड़ा है। बच्चों का खेल किसी निजी सीमा में बँधा नहीं रहता; उसी प्रकार कविता का संसार भी केवल एक व्यक्ति या परिवार तक सीमित नहीं होता।

चरण 2: कविता द्वारा भेदों का अतिक्रमण सब घर एक कर देने का अर्थ मकानों को सचमुच मिला देना नहीं, बल्कि मनुष्यों के बीच की दूरियाँ और भेदभाव मिटाना है। कविता दूसरों के सुख-दुख को अपना अनुभव बनाने में सहायता करती है। वह भाषा, जाति, धर्म, देश और व्यक्तिगत स्वार्थ की संकीर्ण दीवारों से ऊपर उठकर मानवीय संवेदना जगाती है। पाठक किसी दूसरे व्यक्ति के अनुभव में भी अपने जीवन की पहचान करता है। इस तरह कविता में अनेक लोगों के जीवन एक साझा भाव-संसार में जुड़ जाते हैं। कविता का आनंद किसी एक घर की संपत्ति नहीं रहता; वह सबके बीच बाँटा जा सकता है। इस सहभागिता से परिचय और अपनापन बढ़ता है तथा लोग परस्पर निकट आते हैं और सबके प्रति आत्मीयता उत्पन्न होती है।

चरण 3: निष्कर्ष कविता के बहाने सब घर एक करने का आशय संकीर्ण भेदों को मिटाकर सब मनुष्यों को आत्मीयता, संवेदना और व्यापक मानवीय एकता में जोड़ना है।

त्वरित सुझाव: बच्चों के भेदरहित खेल और कविता की व्यापक आत्मीयता का संबंध स्पष्ट करें; घर का अर्थ केवल मकान न लें।

11. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

मेरे परिचितों और साहित्यिक बन्धुओं से भी भक्तिन विशेष परिचित है; पर उनके प्रति भक्तिन के सम्मान की मात्रा, मेरे प्रति उनके सम्मान की मात्रा पर निर्भर है, और सद्भाव उनके प्रति मेरे सद्भाव से निश्चित होता है । इस सम्बन्ध में भक्तिन की सहज बुद्धि विस्मित कर देने वाली है ।

वह किसी को आकार-प्रकार और वेश-भूषा से स्मरण करती है, और किसी को नाम के अपभ्रंश द्वारा । कवि और कविता के सम्बन्ध में उसका ज्ञान बढ़ा है; पर आदर-भाव नहीं । किसी के लम्बे बाल और अस्त-व्यस्त वेश-भूषा देखकर वह कह उठती है 'का ओहू कवित्त लिखे जानत हैं' और तुरन्त ही उसकी अवज्ञा प्रकट हो जाती है – 'तब ऊ कुच्छौ करिहैं धरिहैं ना – बस गली-गली गाउत बजाउत फिरिहैं ।' [8 अंक]

11(क). लेखिका ने भक्तिन की बुद्धि को विस्मित कर देने वाली क्यों कहा है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश में सम्मान और सद्भाव तय करने का वर्णित ढंग है।
- भक्तिन बाहरी परिचय से आगे लेखिका और आगंतुकों के पारस्परिक संबंध को पहचानती है।

चरण 1: संबंधों की सूक्ष्म पहचान भक्तिन लेखिका के परिचितों तथा साहित्यिक बंधुओं से परिचित है। वह पहचान लेती है कि कौन लेखिका को कितना सम्मान देता है। व्यक्ति के प्रति अपना सम्मान तय करते समय वह इसी बात को महत्त्व देती है। इसके लिए किसी औपचारिक परिचय या समझाने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

चरण 2: व्यवहार का आधार जिस व्यक्ति के प्रति लेखिका जैसा सद्भाव रखती हैं, भक्तिन भी उसके प्रति उसी के अनुरूप सद्भाव रखती है। वह लेखिका के मनोभाव और संबंधों की निकटता को सहज रूप से समझकर अपना व्यवहार निर्धारित करती है। उसकी यह व्यावहारिक सूझ और सूक्ष्म निरीक्षण-शक्ति लेखिका को चकित करती है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखिका ने भक्तिन की बुद्धि को विस्मयकारी इसलिए कहा है कि वह लोगों का लेखिका के प्रति सम्मान तथा लेखिका का उनके प्रति सद्भाव सहज ही समझकर अपना व्यवहार तय कर लेती है।

त्वरित सुझाव: सम्मान और सद्भाव के दोनों आधार लिखें: लोग लेखिका को कितना मानते हैं और लेखिका उन्हें कितना मानती हैं।

11(ख). कवियों के सम्बन्ध में भक्तिन की क्या मान्यता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भक्तिन का मत उसके उद्धृत कथन से पहचाना जा सकता है।
- कविता का ज्ञान बढ़ने और कवियों के प्रति आदर बढ़ने में गद्यांश स्पष्ट अंतर करता है।

चरण 1: ज्ञान और आदर में अंतर लेखिका के साथ रहते हुए भक्तिन को कवि और कविता के विषय में पहले से अधिक जानकारी मिली है। फिर भी कवियों के प्रति उसके मन में आदर नहीं बढ़ा। लंबे बाल और अस्त-व्यस्त वेशभूषा वाले व्यक्ति को देखकर वह पूछती है कि क्या वह भी कविता लिखना जानता है।

चरण 2: कवियों के काम के बारे में मान्यता भक्तिन का मानना है कि कवि कोई व्यावहारिक काम-धंधा नहीं करते; वे केवल गली-गली गाते-बजाते घूमते रहते हैं। उसके कथन में इस धारणा के साथ उपेक्षा भी झलकती है। यह कवियों के विषय में भक्तिन की सीमित और व्यावहारिक दृष्टि है; गद्यांश इसे सभी कवियों के बारे में सत्य के रूप में प्रस्तुत नहीं करता।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन समझती है कि कवि कोई काम-धंधा नहीं करते, बस गली-गली गाते-बजाते फिरते हैं; इसलिए कविता का ज्ञान बढ़ने पर भी उसके मन में कवियों के प्रति आदर नहीं बढ़ा।

त्वरित सुझाव: भक्तिन की मान्यता को उसी का मत बताकर लिखें और गाते-बजाते फिरने वाले कथन का आशय समझाएँ।

11(ग). 'अवज्ञा' का क्या तात्पर्य है ? भक्तिन किसके प्रति कैसे अवज्ञा व्यक्त करती है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अवज्ञा का अर्थ उपेक्षा, अनादर या तिरस्कार है।
- गद्यांश में भक्तिन की टिप्पणी उसके कवियों के प्रति अनादर को प्रकट करती है।

चरण 1: शब्द का प्रसंगानुकूल अर्थ यहाँ अवज्ञा का अर्थ किसी व्यक्ति के प्रति सम्मान न रखकर उसकी उपेक्षा या तिरस्कार करना है। भक्तिन के व्यवहार में यह भाव कवियों के संबंध में दिखाई देता है। कविता के विषय में जानकारी मिल जाने पर भी वह उनके कार्य को विशेष महत्त्व नहीं देती।

चरण 2: व्यवहार में अवज्ञा किसी के लंबे बाल और अस्त-व्यस्त वेशभूषा को देखकर भक्तिन पहले पूछती है कि क्या वह भी कविता लिखना जानता है। फिर वह कह देती है कि ऐसा व्यक्ति कुछ काम-धंधा नहीं करेगा, केवल गली-गली गाता-बजाता फिरेगा। कवि के कार्य को निरर्थक मानने वाली इस टिप्पणी से उसका अनादर व्यक्त होता है। यही उद्धृत गद्यांश में अवज्ञा की अभिव्यक्ति है।

चरण 3: निष्कर्ष अवज्ञा का तात्पर्य अनादर या उपेक्षा है। भक्तिन कवियों को काम-धंधा न करने वाले और गली-गली गाते-बजाते फिरने वाले बताकर उनके प्रति अवज्ञा व्यक्त करती है।

त्वरित सुझाव: पहले अवज्ञा का अर्थ दें, फिर कवियों के प्रति भक्तिन की टिप्पणी से उसका उदाहरण जोड़ें।

11(घ). आशय स्पष्ट कीजिए – 'और सद्भाव उनके प्रति मेरे सद्भाव से निश्चित होता है ।' [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह कथन भक्तिन और लेखिका के भावनात्मक संबंध को स्पष्ट करता है।
- भक्तिन परिचितों के प्रति अपना व्यवहार लेखिका के मनोभाव के अनुसार तय करती है।

चरण 1: सर्वनामों का संदर्भ कथन में मेरे का संबंध लेखिका से है और उनके से आशय लेखिका के परिचितों तथा साहित्यिक बंधुओं से है। भक्तिन इन लोगों के प्रति अपनी आत्मीयता या सद्भाव स्वतंत्र बाहरी प्रभाव से तय नहीं करती, बल्कि यह देखती है कि लेखिका का उनके प्रति कैसा भाव है।

चरण 2: कथन का आशय जिस व्यक्ति के प्रति लेखिका स्नेह और आत्मीयता रखती हैं, उसके प्रति भक्तिन भी सद्भाव रखती है। उसके व्यवहार की निकटता लेखिका की भावना के अनुरूप होती है। इससे स्पष्ट होता है कि भक्तिन लेखिका के मन को समझती है और उनके संबंधों के साथ अपने व्यवहार को जोड़ लेती है। यह उसकी भावनात्मक एकनिष्ठता और सहज सूझ का परिचायक है।

चरण 3: निष्कर्ष आशय यह है कि लेखिका अपने परिचितों के प्रति जितनी आत्मीयता और सद्भाव रखती हैं, भक्तिन भी उनके प्रति उसी के अनुरूप सद्भाव रखती है; लेखिका का भाव ही उसके व्यवहार का आधार बनता है।

त्वरित सुझाव: मेरे और उनके के संदर्भ पहले पहचानें, फिर लेखिका के भाव और भक्तिन के व्यवहार का संबंध बताएँ।

अथवा

11. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

मैं सोचता हूँ कि पुराने की यह अधिकार-लिप्सा क्यों नहीं समय रहते सावधान हो जाती ? जरा और मृत्यु, ये दोनों ही जगत के अति परिचित और अति प्रामाणिक सत्य हैं । तुलसीदास ने अफ़सोस के साथ इनकी सच्चाई पर मुहर लगाई थी – 'धरा को प्रमान यही तुलसी जो फरा सो झरा, जो बरा सो बुताना ।' मैं शिरीष के फूलों को देखकर कहता हूँ कि क्यों नहीं फलते ही समझ लेते बाबा कि झड़ना निश्चित है । सुनता कौन है ? महाकाल देवता सपासप कोड़े चला रहे हैं, जीर्ण और दुर्बल झड़ रहे हैं, जिनमें प्राण-कण थोड़ा भी ऊर्ध्वमुखी है, वे टिक जाते हैं । दुरंत प्राणधारा और सर्वव्यापक कालाग्नि का संघर्ष निरन्तर चल रहा है । मूर्ख समझते हैं कि जहाँ बने हैं, वहीं देर तक बने रहें तो काल-देवता की आँख बचा जाएँगे । [8 अंक]

11(क). शिरीष की किस विशेषता के कारण लेखक को यह सब लिखना पड़ा है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न शिरीष के स्वभाव से निकाले गए मानवीय संकेत की पहचान करता है।
- लेखक पुराने के स्थान-मोह के सामने परिवर्तन और नश्वरता का सत्य रखता है।

चरण 1: विशेषता की पहचान शिरीष के पुराने फल सूख जाने पर भी अपनी जगह से चिपके रहते हैं। वे सहज ही स्थान खाली नहीं करते। फल लगने के बाद उनका झड़ना निश्चित है, फिर भी उनकी यह जिद बनी रहती है। इसी विशेषता में लेखक को पुराने लोगों की अधिकार-लिप्सा का रूप दिखाई देता है।

चरण 2: लेखक के विचार से संबंध पुराने फल जैसे अपनी जगह नहीं छोड़ते, वैसे ही कुछ लोग समय बीतने और शक्ति क्षीण होने पर भी अधिकार बनाए रखना चाहते हैं। गद्यांश में लेखक पूछता है कि पुराने की अधिकार-लिप्सा समय रहते सावधान क्यों नहीं होती। शिरीष की इसी जिद्दी पकड़ ने उसे जरा, मृत्यु और परिवर्तन की अनिवार्यता पर विचार करने के लिए प्रेरित किया है।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष के पुराने, सूखे फलों का डालियों पर चिपके रहना और सहजता से स्थान न छोड़ना ही लेखक के इस चिंतन का कारण है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पुराने फलों के चिपके रहने को मनुष्य के अधिकार-मोह से अवश्य जोड़ें।

11(ख). मूर्ख अपना स्थान क्यों नहीं छोड़ते हैं ? उन्हें क्या समझना ज़रूरी है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न गद्यांश में मूर्खता के रूप में बताए गए स्थान-मोह का आशय पूछता है।
- जरा और मृत्यु अनिवार्य हैं; स्थिर रहकर काल के प्रभाव से नहीं बचा जा सकता।

चरण 1: स्थान न छोड़ने का कारण मूर्ख व्यक्ति अपने पद, स्थान और अधिकार के प्रति आसक्त रहते हैं। वे सोचते हैं कि जहाँ बने हैं, वहीं देर तक बने रहने से काल-देवता की आँख बचा लेंगे। अर्थात वे परिवर्तन की उपेक्षा करके अपने अस्तित्व और अधिकार को हमेशा सुरक्षित मान लेते हैं। यही भ्रम उन्हें स्थान नहीं छोड़ने देता।

चरण 2: समझने योग्य सत्य उन्हें समझना चाहिए कि जरा और मृत्यु संसार के सुनिश्चित सत्य हैं। जो फलता है, वह झड़ता भी है; इसलिए किसी स्थान पर जमे रहने से अंत या परिवर्तन टल नहीं सकता। गद्यांश में जीर्ण और दुर्बल के झड़ने तथा ऊर्ध्वमुखी प्राण-शक्ति वाले के टिकने का उल्लेख है। अत: टिके रहने का आधार जड़ आसक्ति नहीं, जीवंतता और विकास है।

चरण 3: निष्कर्ष मूर्ख अधिकार-मोह और काल से बच निकलने के भ्रम के कारण स्थान नहीं छोड़ते। उन्हें परिवर्तन, बुढ़ापे और मृत्यु की अनिवार्यता समझनी चाहिए।

त्वरित सुझाव: पहले स्थान न छोड़ने का भ्रम बताएँ, फिर जरा-मृत्यु के अनिवार्य सत्य से उसका खंडन करें।

11(ग). किस सच्चाई को उजागर करने के लिए तुलसी को उद्धृत किया गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न उद्धृत पंक्ति और गद्यांश के केंद्रीय विचार का संबंध स्पष्ट करता है।
- फलने के बाद झड़ना और जलने के बाद बुझना संसार की नश्वरता के उदाहरण हैं।

चरण 1: उद्धरण का अर्थ तुलसी के कथन में फलने के बाद झड़ने और जलने के बाद बुझने की बात कही गई है। इसका आशय है कि उत्पत्ति, विकास या उत्कर्ष के साथ अंत की संभावना भी जुड़ी है। संसार में कोई अवस्था सदा एक जैसी बनी नहीं रहती। जो आज विकसित और शक्तिशाली है, उसे भी क्षय का सामना करना पड़ता है।

चरण 2: गद्यांश से संबंध लेखक इस उद्धरण से जरा और मृत्यु की सच्चाई प्रमाणित करता है। गद्यांश इन्हें जगत के अति परिचित और प्रामाणिक सत्य कहता है। शिरीष के फलों के माध्यम से वह बताता है कि फल लगने पर झड़ना निश्चित समझ लेना चाहिए। फिर भी पुराने लोग अपने अधिकार को स्थायी मानते हैं। तुलसी का कथन इसी भ्रम को तोड़कर जीवन की नश्वरता उजागर करता है।

चरण 3: निष्कर्ष तुलसी को इस सत्य की पुष्टि के लिए उद्धृत किया गया है कि संसार नश्वर है; जो फलता है वह झड़ता है और जो जलता है वह बुझता है। जरा और मृत्यु अनिवार्य हैं।

त्वरित सुझाव: उद्धरण का केवल अर्थ न लिखें; उसे गद्यांश में आए जरा और मृत्यु के सत्य से जोड़ें।

11(घ). 'महाकाल देवता सपासप कोड़े चला रहे हैं' कथन से लेखक का क्या आशय है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न प्रतीकात्मक कथन का प्रसंगानुकूल अर्थ स्पष्ट करने की क्षमता जाँचता है।
- महाकाल समय का और कोड़े काल के कठोर, निरंतर प्रभाव का संकेत हैं।

चरण 1: कथन का प्रतीकात्मक अर्थ महाकाल देवता के सपासप कोड़े चलाने का अर्थ समय का निरंतर और कठोर गति से आगे बढ़ना है। समय किसी के मोह या इच्छा के कारण रुकता नहीं। उसके प्रभाव से जीर्णता आती है, दुर्बल का क्षय होता है और पुरानी अवस्थाएँ समाप्त होती हैं। यहाँ वास्तविक कोड़े मारने का दृश्य नहीं, काल के प्रबल प्रभाव की अभिव्यक्ति है।

चरण 2: जीवन और काल के संघर्ष का आशय गद्यांश में जीर्ण और दुर्बल के झड़ने तथा ऊर्ध्वमुखी प्राण-कण वाले के टिकने की बात कही गई है। इससे लेखक बताता है कि जीवन-शक्ति और काल के बीच निरंतर संघर्ष चलता है। समय पुरानी, अशक्त चीजों को हटाता चलता है। इसलिए केवल स्थान पकड़कर बैठना बचाव नहीं है; जीवंतता और विकास की शक्ति ही कुछ समय तक टिकाए रखती है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक का आशय है कि काल निरंतर सबको क्षीण और परिवर्तित कर रहा है। जीर्ण-दुर्बल नष्ट होते हैं, जबकि ऊर्ध्वमुखी जीवन-शक्ति वाले टिकते हैं।

त्वरित सुझाव: महाकाल को समय मानकर कथन का अर्थ खोलें और जीर्ण-दुर्बल के झड़ने का संदर्भ दें।

12(क). निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

" 'भक्तिन अच्छी है' यह कहना कठिन है" – महादेवी वर्मा के इस कथन की सोदाहरण समीक्षा कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न महादेवी वर्मा के रेखाचित्र में भक्तिन के गुण-दोषों का संतुलित विवेचन चाहता है।
- किसी चरित्र का मूल्यांकन उसके व्यवहार, सेवा, निष्ठा और मानवीय दुर्बलताओं के उदाहरणों से किया जाता है।

चरण 1: कथन का आधार और दुर्बलताएँ महादेवी वर्मा भक्तिन को आदर्श और सर्वथा निर्दोष चरित्र बनाकर नहीं प्रस्तुत करतीं। भक्तिन कभी इधर-उधर पड़े पैसे भंडारघर की मटकी में रख लेती है और इसे चोरी नहीं मानती। लेखिका को प्रसन्न रखने के लिए बात को बदलकर कहना भी उसे अनुचित नहीं लगता। वह शास्त्रों की अपनी सुविधानुसार व्याख्या करती है और अपनी मान्यताओं पर अड़ी रहती है। इन व्यवहारों के कारण सामान्य नैतिक कसौटी पर उसे बिना किसी शर्त के अच्छी कहना कठिन होता है।

चरण 2: गुणों के पक्ष में उदाहरण इन कमियों के बावजूद भक्तिन में गहरी सेवा-भावना, कर्मठता, स्वाभिमान और आत्मीयता है। वह लेखिका की सुख-सुविधा का ध्यान रखती है और अपने को उनके जीवन से अभिन्न मानती है। लेखिका के संकट में भी साथ रहने की उसकी इच्छा उसकी निष्ठा दिखाती है। वह मात्र वेतन के संबंध से बँधी सेविका नहीं रहती; अपनेपन से लेखिका की देखभाल करती है। जीवन की कठिनाइयों ने उसे कठोर बनाया है, लेकिन उसकी आत्मीयता समाप्त नहीं की है।

चरण 3: संतुलित समीक्षा लेखिका का कथन भक्तिन की निंदा नहीं, उसके जटिल मानवीय व्यक्तित्व का यथार्थ चित्रण है। उसके छोटे दोष स्पष्ट हैं, इसलिए उसे पूर्णतः निर्दोष नहीं कहा जा सकता। किंतु इन्हीं दोषों के आधार पर उसकी निष्ठा और सेवा को नकारना भी अनुचित होगा। लेखिका उसके व्यवहार को छिपाए बिना उसकी असाधारण आत्मीयता सामने लाती हैं। इसीलिए भक्तिन साधारण अच्छाई-बुराई की कसौटी में पूरी तरह समा नहीं पाती।

चरण 4: निष्कर्ष भक्तिन में पैसे छिपाने, बात बदलने और हठ जैसी कमजोरियाँ हैं, पर उसकी सेवा, निष्ठा, कर्मठता और आत्मीयता कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। कथन उसके गुण-दोषों से युक्त सजीव व्यक्तित्व को व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: समीक्षा में पैसे रखने जैसा एक दोष और आत्मीय सेवा जैसा एक गुण देकर संतुलित निर्णय लिखें।

12(ख). निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

'बाज़ार-दर्शन' के लेखक ने भगत जी का उदाहरण क्यों दिया है ? स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न जैनेंद्र कुमार के निबंध में दिए गए उदाहरण के माध्यम से बाज़ार के उपयोग की दृष्टि स्पष्ट करता है।
- आवश्यकता का ज्ञान और संतोष व्यक्ति को बाज़ार के आकर्षण तथा अनावश्यक संग्रह से बचाते हैं।

चरण 1: भगत जी का आचरण लेखक भगत जी का उदाहरण ऐसे व्यक्ति के रूप में देता है जो बाज़ार की चकाचौंध से प्रभावित नहीं होता। भगत जी चूरन बेचते हैं। वे रोज उतना ही चूरन बेचते हैं जिससे उनकी निश्चित सीमित आमदनी हो जाए। उसके बाद बचा चूरन बच्चों में बाँट देते हैं। अधिक ग्राहक मिल जाने पर भी अधिक धन कमाने की लालसा उन्हें अपने नियम से विचलित नहीं करती। यह व्यवहार उनके संतोष और अपने जीवन की जरूरतों की स्पष्ट पहचान को दिखाता है।

चरण 2: बाज़ार के आकर्षण से मुक्ति भगत जी को पता है कि उन्हें क्या चाहिए और कितना चाहिए। इसलिए बाज़ार का जादू उन पर प्रभाव नहीं डालता। वे दूसरे लोगों को अभाव या स्पर्धा की दृष्टि से नहीं देखते और संचय की होड़ में नहीं पड़ते। उनके सामने बाज़ार की वस्तुएँ अनावश्यक खरीद की इच्छा पैदा नहीं करतीं। इस उदाहरण से लेखक मन की रिक्तता और लोभ से उत्पन्न खरीदारी के विपरीत एक संयमित जीवन-दृष्टि रखता है।

चरण 3: उदाहरण का उद्देश्य लेखक स्पष्ट करता है कि बाज़ार की सार्थकता जरूरत पूरी करने में है। जो व्यक्ति अपनी आवश्यकता जानता है, वही बाज़ार से सही लाभ ले सकता है। भगत जी इस विचार का ठोस उदाहरण हैं। वे न बाजार से भागते हैं, न उसके मोह में

विवेक खोते हैं। उनकी तृप्ति और संयम यह बताते हैं कि मन की पूर्णता व्यक्ति को धन और वस्तुओं की अंधी दौड़ से बचाती है।

चरण 4: निष्कर्ष लेखक ने भगत जी का उदाहरण यह दिखाने के लिए दिया है कि स्पष्ट आवश्यकता, संतोष और संयम वाला व्यक्ति बाज़ार के आकर्षण से बचकर उसका सार्थक उपयोग करता है।

त्वरित सुझाव: भगत जी की सीमित बिक्री और बचा चूरन बाँटने को संतोष तथा बाज़ार के जादू से मुक्ति से जोड़ें।

12(ग). निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

इंदर सेना पर पानी फेंके जाने पर लेखक की मान्यता को जीजी कैसे छिन्न-भिन्न कर देती है ? स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इस प्रसंग में लेखक का तर्कशील मन और जीजी की लोक-आस्था आमने-सामने आती हैं।
- जीजी पानी के दान को त्याग और वर्षा की कामना से जोड़ती हैं; बीज बोने का उदाहरण उनकी बात का आधार है।

चरण 1: लेखक की आपत्ति समझना लेखक का मानना था कि जब चारों ओर पानी का अकाल है, तब इंदर सेना के लड़कों पर बाल्टी भर पानी फेंकना पानी की बरबादी है। वह इस व्यवहार को अंधविश्वास समझता था। उसके अनुसार उपलब्ध पानी को बचाना चाहिए; उसे यूँ बहा देने से वर्षा होने का कोई तार्किक संबंध दिखाई नहीं देता।

चरण 2: जीजी का तर्क स्पष्ट करना जीजी समझाती हैं कि यह पानी की बरबादी नहीं, इंद्र को दिया गया अर्घ्य है। जिस वस्तु की कमी होती है, उसका दान ही वास्तविक त्याग होता है। वे किसान का उदाहरण देती हैं: किसान अच्छे बीजों को सँभालकर खा नहीं जाता, उन्हें खेत में बो देता है, तभी वे कई गुना अनाज बनकर लौटते हैं। इसी प्रकार थोड़ा पानी देकर लोग वर्षा के रूप में बहुत पानी पाने की कामना करते हैं। उनका तर्क यह भी है कि जब सब पाने की ही सोचेंगे, तब देने वाला कौन होगा? इस प्रकार वे पानी फेंकने को निरर्थक खर्च मानने वाली लेखक की धारणा को दान, त्याग और सामूहिक कल्याण की भावना से चुनौती देती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष जीजी अभाव में दिए गए दान का महत्त्व और बीज बोने का उदाहरण सामने रखकर लेखक की मान्यता छिन्न-भिन्न कर देती हैं। उनके लिए यह लोकाचार वर्षा की प्रार्थना के साथ देने और त्याग करने का संस्कार है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में लेखक की पानी बचाने की दलील के बाद जीजी का बीज बोने वाला उदाहरण अवश्य जोड़ें।

12(घ). निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

'पहलवान की ढोलक' के आधार पर लिखिए कि प्राचीन लोककलाएँ किस प्रकार धीरे-धीरे विलुप्त हो रही हैं । उनके पुनर्जीवन के लिए क्या किया जा सकता है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लोककलाएँ कलाकार की साधना के साथ सामाजिक सहयोग और संरक्षण पर निर्भर करती हैं।
- कहानी में लुट्टन और उसकी ढोलक का प्रसंग बदलती रुचियों के कारण लोककला की उपेक्षा को व्यक्त करता है।

चरण 1: विलुप्त होने के कारण प्राचीन लोककलाओं के क्षय का प्रमुख कारण उनके संरक्षण और कलाकारों की आजीविका का संकट है। कहानी में राजा श्यामानंद के समय लुट्टन पहलवान को सम्मान और आश्रय प्राप्त था। राजा के बाद नए राजकुमार की रुचियाँ बदलने पर कुश्ती तथा पहलवान का महत्त्व समाप्त होने लगता है और लुट्टन को राजाश्रय छोड़ना पड़ता है। इससे स्पष्ट है कि नई जीवनशैली और मनोरंजन की बदलती रुचियाँ पुरानी कलाओं को हाशिए पर पहुँचा देती हैं। निर्धनता तथा अवसरों के अभाव में अगली पीढ़ी भी उन्हें अपनाने से कतराती है।

चरण 2: कला का मूल्य और पुनर्जीवन के उपाय महामारी से त्रस्त गाँव में ढोलक की आवाज लोगों को भय और निराशा से लड़ने

का साहस देती है। अतः इन कलाओं को केवल बीते समय का मनोरंजन समझना अनुचित है। उनके पुनर्जीवन के लिए कलाकारों को नियमित आर्थिक सहायता, सम्मान और प्रस्तुति के अवसर मिलने चाहिए। विद्यालयों में प्रशिक्षण, स्थानीय मेलों और सांस्कृतिक उत्सवों का आयोजन तथा अनुभवी कलाकारों से नई पीढ़ी को जोड़ना उपयोगी होगा। लोकधुनों और प्रदर्शन-शैलियों का प्रामाणिक अभिलेखन तथा संचार माध्यमों द्वारा प्रसार भी आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष लोककलाएँ संरक्षण, आजीविका और जनरुचि के अभाव में लुप्त होती हैं। कलाकारों को सम्मानजनक जीवन और नई पीढ़ी को सीखने के अवसर देकर उन्हें फिर जीवंत बनाया जा सकता है।

त्वरित सुझाव: कहानी के राजाश्रय समाप्त होने वाले प्रसंग को कारण से और महामारी में ढोलक की भूमिका को कला के महत्त्व से जोड़ें।

12(ङ). निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

लेखक ने चार्ली चैप्लिन का भारतीयकरण किसे कहा है और क्यों ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चार्ली की कला में साधारण मनुष्य अपनी कमजोरियों तथा दुखों को हँसी के माध्यम से पहचानता है।
- भारतीयकरण का अर्थ चार्ली की कलात्मक विशेषताओं को भारतीय परिवेश, पात्र और संवेदना के अनुरूप अपनाना है।

चरण 1: भारतीयकरण की पहचान लेखक ने राज कपूर की फिल्म 'आवारा' में चार्ली की परंपरा को भारतीय रूप में अपनाए जाने को उनका भारतीयकरण कहा है। राज कपूर का साधारण, अभावग्रस्त और भोला नायक प्रतिष्ठित वीर नायक की छवि से अलग है। वह स्वयं भी हास्य का पात्र बनता है, किंतु उसके प्रति दर्शक का अपनापन और सहानुभूति बनी रहती है। इस प्रकार चार्ली के आम आदमी वाले चरित्र को भारतीय समाज की परिस्थितियों में नया रूप मिलता है।

चरण 2: इस नामकरण का कारण चार्ली के यहाँ हास्य और करुणा परस्पर जुड़े हैं। उनका पात्र दूसरों पर ही नहीं, स्वयं पर भी हँसने की क्षमता रखता है; उसकी असफलताओं और असहायता में दर्शक अपने जीवन की छाया देखता है। राज कपूर ने इसी विशेषता को भारतीय परिवेश और भावनाओं से जोड़ा। 'आवारा' का नायक सामाजिक विषमता से जूझता हुआ हँसाता भी है और अपनी पीड़ा से द्रवित भी करता है। इसलिए यह केवल बाहरी वेशभूषा या चाल की नकल नहीं, चार्ली की मानवीय दृष्टि का भारतीय सामाजिक यथार्थ में रूपांतरण है।

चरण 3: निष्कर्ष राज कपूर द्वारा 'आवारा' में चार्ली के साधारण, अपने ऊपर हँस सकने वाले और करुणा जगाने वाले नायक को भारतीय जीवन से जोड़ना ही चार्ली का भारतीयकरण है।

त्वरित सुझाव: पहले राज कपूर और 'आवारा' का स्पष्ट उल्लेख करें, फिर हास्य, करुणा तथा आम आदमी से जुड़ाव के आधार पर कारण दें।

13. यशोधर बाबू किन जीवन-मूल्यों को थामे बैठे हैं ? नई पीढ़ी उन्हें प्रासंगिक क्यों नहीं मानती ? तर्कसम्मत उत्तर दीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी में यशोधर बाबू और उनके परिवार के बीच जीवन-दृष्टि तथा प्राथमिकताओं का अंतर पीढ़ियों के द्वंद्व को सामने लाता है।
- पुरानी पीढ़ी की सादगी, सामुदायिकता और नैतिकता के सामने नई पीढ़ी सुविधा, स्वतंत्रता और आर्थिक प्रगति को महत्त्व देती है।

चरण 1: यशोधर बाबू के जीवन-मूल्य यशोधर बाबू सादगी, मितव्ययिता, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा और मर्यादा को थामे बैठे हैं। वे आडंबरपूर्ण प्रदर्शन तथा अनावश्यक खर्च को उचित नहीं मानते। उनके व्यक्तित्व पर किशनदा के अनुशासित और सादे जीवन का गहरा प्रभाव है। इसलिए वे नौकरी, पारिवारिक दायित्व और नैतिक आचरण को महत्त्व देते हैं। आधुनिक दिखने की होड़ उन्हें आकर्षित नहीं करती और बहुत ऊँची कमाई या दिखावटी उत्सव अपने आप में उनके लिए श्रेष्ठता का प्रमाण नहीं हैं।

चरण 2: आत्मीयता और सामाजिक दायित्व उनकी दृष्टि में जीवन केवल व्यक्तिगत सुख-सुविधा तक सीमित नहीं है। वे रिश्तेदारी, सामाजिक संबंध, परंपराओं तथा सामूहिक आत्मीयता को महत्त्व देते हैं। आर्थिक कठिनाइयों से जूझ रहे संबंधी की सहायता की बात भी उनकी इसी संवेदना का परिचय देती है। किशनदा की स्मृतियों के प्रति उनका लगाव बताता है कि वे अपने अतीत और उसे गढ़ने वाले लोगों को भुला नहीं सकते। वे परिवार में बड़ों के अनुभव और संयम को भी आदर मिलते देखना चाहते हैं।

चरण 3: नई पीढ़ी की अलग प्राथमिकताएँ उनके बच्चे बदलते शहरी जीवन में आर्थिक उन्नति, आधुनिक सुविधाओं और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को सफलता का आधार मानते हैं। वे पिता की मितव्ययिता को कई बार अनावश्यक रोक-टोक और परंपरानिष्ठा को पुराने समय से चिपके रहना समझते हैं। भूषण का अधिक वेतन और घर में आयोजित विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ का उत्सव इस बदली जीवन-दृष्टि को प्रकट करते हैं। बेटे का पिता को ड्रेसिंग गाउन देना सुविधा और नए ढंग से रहने की उसकी इच्छा बताता है, पर पिता उस उपहार के साथ व्यक्त अपेक्षा में अपने वर्तमान आचरण की अस्वीकृति भी अनुभव करते हैं।

चरण 4: दोनों दृष्टियों का तर्कसम्मत मूल्यांकन नई पीढ़ी का आधुनिक सुविधाएँ चाहना स्वाभाविक है, पर उससे ईमानदारी, संयम और आत्मीयता का मूल्य समाप्त नहीं हो जाता। इसी प्रकार यशोधर बाबू की नैतिकता सम्माननीय है, किंतु हर नए व्यवहार को संदेह से देखने पर संवाद कठिन होता है। दोनों पीढ़ियों के बीच समस्या केवल अच्छे और बुरे मूल्यों की नहीं, बदलती परिस्थितियों में एक-दूसरे की जरूरत और भावना न समझ पाने की भी है।

चरण 5: निष्कर्ष यशोधर बाबू सादगी, ईमानदारी, सामाजिक आत्मीयता और परंपरागत मर्यादा से जुड़े हैं। नई पीढ़ी उन्हें अपनी प्रगति और आधुनिक जीवन की आकांक्षाओं के अनुकूल नहीं मानती। कहानी इन मूल्यों को त्यागने के बजाय संवाद और समयानुकूल समन्वय की आवश्यकता सामने रखती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में मूल्यों की सूची के साथ किशनदा, भूषण और वर्षगाँठ के प्रसंग जोड़ें; दोनों पीढ़ियों का संतुलित मूल्यांकन करें।

14(क). टूटे-फूटे खंडहर सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के साथ-साथ धड़कती ज़िन्दगियों के अनछुए समयों के जीवन्त दस्तावेज़ होते हैं। कैसे? 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर उत्तर की पुष्टि कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पुरातात्त्विक अवशेष केवल ईंट-पत्थर नहीं होते; वे पुराने समाज की जीवन-पद्धति, कलाबोध और सामूहिक व्यवस्था को समझने के प्रमाण होते हैं।
- 'अतीत में दबे पाँव' में ओम थानवी मोहनजोदड़ो के अवशेषों के माध्यम से वहाँ रहने वाले सामान्य लोगों के जीवन की उपस्थिति अनुभव करते हैं।

चरण 1: नगर के खंडहरों में दैनिक जीवन के प्रमाण मोहनजोदड़ो की सुनियोजित सड़कें, गलियाँ, घर, आँगन, कुएँ और ढकी हुई नालियाँ वहाँ की विकसित नगर-व्यवस्था का परिचय देती हैं। इन्हें देखकर केवल स्थापत्य का इतिहास नहीं मिलता, बल्कि उन परिवारों की दिनचर्या का भी अनुमान होता है जो इन घरों में रहते थे। आँगन घरेलू गतिविधियों की, कुएँ जल की आवश्यकता की और नालियाँ स्वच्छता के प्रति सजगता की याद दिलाती हैं। विशाल स्नानागार से सामुदायिक जीवन और व्यवस्थित निर्माण-कौशल का परिचय मिलता है। इस प्रकार निर्जीव दिखाई देने वाली संरचनाओं में लोगों का जीता-जागता संसार छिपा है।

चरण 2: वस्तुओं और कलाकृतियों में मनुष्य की उपस्थिति खुदाई में मिले बर्तन, खिलौने, आभूषण और मूर्तियाँ तत्कालीन लोगों की रुचियों तथा आवश्यकताओं को सामने लाती हैं। खिलौने बच्चों की दुनिया और आभूषण सौंदर्यबोध का संकेत देते हैं। नर्तकी की छोटी-सी मूर्ति में व्यक्त सहजता और आत्मविश्वास उस समय की कलात्मक चेतना को मूर्त करते हैं। ये वस्तुएँ राजाओं की विजय-कथाओं से आगे बढ़कर साधारण मनुष्यों के श्रम, आनंद और सृजन को हमारे निकट लाती हैं।

चरण 3: पाठ की दृष्टि से कथन की पुष्टि लेखक के लिए इन खंडहरों में घूमना अतीत से संवाद करना है। नगर की व्यवस्था और उपलब्ध वस्तुओं से ऐसी सभ्यता उभरती है जिसमें नागरिक जीवन और सुरुचि को महत्त्व मिला था। सत्ता के भव्य प्रदर्शन की अपेक्षा यहाँ आम जन के जीवन की छाप अधिक दिखाई देती है। हम उन अज्ञात व्यक्तियों के नाम नहीं जानते, फिर भी उनके बनाए घरों और उपयोग की

वस्तुओं से उनके अस्तित्व को महसूस करते हैं। इसीलिए खंडहर अनछुए समयों की स्मृतियों को वर्तमान में जीवित रखने वाले दस्तावेज़ बन जाते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष मोहनजोदड़ो के खंडहर सभ्यता की उपलब्धियों के साथ मनुष्य की दिनचर्या, रुचियों और सामूहिक जीवन के साक्ष्य सुरक्षित रखते हैं। इसलिए वे इतिहास के साथ धड़कती ज़िंदगियों के भी जीवंत दस्तावेज़ हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में नगर-योजना के साथ खिलौनों, आभूषणों और नर्तकी जैसी वस्तुओं को जोड़कर बताएँ कि उनसे लोगों के जीवन का कौन-सा पक्ष खुलता है।

14(ख). 'जूझ' कहानी के लेखक के जीवन-संघर्ष के उन बिन्दुओं पर प्रकाश डालिए जो हमारे लिए प्रेरणादायक हैं । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'जूझ' आनंद यादव की शिक्षा प्राप्त करने और अपनी रचनात्मक प्रतिभा विकसित करने की संघर्ष-कथा है।
- लेखक का जीवन दिखाता है कि विपरीत पारिवारिक परिस्थितियों में भी लगन, परिश्रम, आत्मविश्वास और उचित मार्गदर्शन से आगे बढ़ा जा सकता है।

चरण 1: शिक्षा के लिए दृढ़ संकल्प लेखक का पिता उसकी पढ़ाई छुड़ाकर उसे खेती के काम में लगाना चाहता था। लेखक समझता था कि शिक्षा ही उसे सीमित जीवन से बाहर निकलने का अवसर दे सकती है। इसलिए उसने परिस्थितियों को अपना भाग्य मानकर स्वीकार नहीं किया। माँ की सहायता और दत्ता जी राव के हस्तक्षेप से उसे फिर विद्यालय जाने की अनुमति मिली। अपने हित के लिए प्रयास करना और उचित व्यक्ति से सहायता लेना हमें सिखाता है कि बाधाओं का समाधान खोजे बिना हार नहीं माननी चाहिए।

चरण 2: श्रम और पढ़ाई के बीच संतुलन विद्यालय जाने की अनुमति मिलने पर भी लेखक खेती और घर की जिम्मेदारियों से मुक्त नहीं हुआ। उसे खेत का काम करके विद्यालय जाना पड़ता था। इस कठिन दिनचर्या के बावजूद उसने अध्ययन के लिए समय निकाला। वह शारीरिक श्रम से बचना नहीं चाहता था, किंतु पढ़ाई छोड़ने को भी तैयार नहीं था। उसका संघर्ष बताता है कि लक्ष्य की प्राप्ति केवल इच्छा से नहीं होती; उसके लिए समय का सदुपयोग और निरंतर परिश्रम आवश्यक है।

चरण 3: आत्मविश्वास और रचनात्मकता का विकास दोबारा विद्यालय पहुँचने पर पहनावे और पिछड़े हुए अध्ययन के कारण उसे संकोच हुआ, पर उसने अपने को स्थायी रूप से कमतर नहीं माना। पढ़ाई में आगे बढ़कर उसने अपना स्थान बनाया। न. वा. सौंदलगेकर के कविता पढ़ाने के ढंग ने उसके भीतर कविता के प्रति रुचि जगाई। वह कविताओं को गुनगुनाने लगा और फिर स्वयं कविता रचने का अभ्यास करने लगा। खेत का एकांत भी उसके लिए कल्पना और काव्याभ्यास का अवसर बन गया। इस प्रकार उसने प्रतिकूल परिस्थिति को अपनी प्रतिभा विकसित करने का साधन बनाया।

चरण 4: निष्कर्ष लेखक की शिक्षा के प्रति लगन, कठिन श्रम के बीच अध्ययन, संकोच पर विजय और काव्य-सृजन की साधना प्रेरणादायक हैं। 'जूझ' हमें सिखाता है कि निरंतर प्रयास तथा सही मार्गदर्शन से मनुष्य अपने विकास की राह बना सकता है।

त्वरित सुझाव: प्रत्येक प्रेरक गुण को किसी घटना से जोड़ें—पिता का विरोध, खेत और विद्यालय की दिनचर्या तथा सौंदलगेकर से मिली काव्य-प्रेरणा इसके प्रमुख आधार हैं।